वेद्मन्त्राः

Colophon

This document was typeset using X₂MT_EX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several MT_EX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and https://sa.wikisource.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma. See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका i

अनुऋमणिका

| रुद्रप्रश्नः | 1 |
|----------------|----|
| चमकप्रश्नः | 9 |
| पुरुषसूक्तम् | 14 |
| नारायणसूक्तम् | 16 |
| विष्णुसूक्तम् | 17 |
| भूसूक्तम् | 18 |
| दुर्गा सूक्तम् | 20 |
| श्रीसूक्तम् | 21 |
| मेधासूक्तम् | 23 |
| भाग्यसूक्तम् | 24 |
| पवमानसूक्तम् | 24 |
| आयुष्यसूक्तम् | 27 |
| नवग्रहसूक्तम् | 29 |
| नक्षत्रसूक्तम् | 32 |

| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 39 |
|--|----|
| मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः | 42 |
| महान्यासः | 45 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 45 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 47 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 50 |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 56 |
| पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 56 |
| हंसगायत्री | 57 |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 58 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 62 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः | 67 |
| आत्मरक्षा | 68 |
| शिवसङ्कल्पः | 69 |
| पुरुषसूक्तम् | 74 |
| उत्तरनारायणम् | 76 |
| अप्रतिरथम् | 76 |
| प्रतिपूरुषम् (सं०) | 78 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा॰) | 79 |
| शतरुद्रीयम् (सं॰) | 80 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा॰) | 83 |
| पञ्चाङ्गम् | 84 |

| | अष्टाङ्ग-नम | स्का | राः | | | | • | • | | | • | | | | • | | | 85 |
|------------|----------------|---------|-----------------|------|-----|----|----|---|---|---|---|--|--|--|---|--|--|-----|
| | लघुन्यासे १ | श्री रु | द्रध्य | यान | ाम् | | | | | | | | | | | | | 86 |
| | लघुन्यासे वे | वता | _{-स्थ} | याप | न | Ą | | | | | | | | | | | | 87 |
| | कलशेषु सा | म्बप | रमे | श्वर | ्ध | या | नम | Į | | | | | | | | | | 89 |
| | षोडशोपचा | र पू | जा | | | | | | | | | | | | | | | 90 |
| | श्रीरुद्रनाम | त्रिश | ती | | | | | | | | | | | | | | | 90 |
| | प्रदक्षिणम् | | | | | | • | | • | • | • | | | | | | | 97 |
| | नमस्काराः | | | | | | • | | • | • | • | | | | | | | 98 |
| | चमकानुवा | कैः प्र | गर्थ | ना | | | | | | | | | | | | | | 100 |
| | C | | | | | | | | | | | | | | | | | 105 |
| | श्रीरुद्रजपः | | | | | | | | | | | | | | | | | 105 |
| | ध्यानम् . | | | | | | • | | • | • | • | | | | | | | 107 |
| | रुद्रप्रश्नः . | | | | | | • | | • | • | • | | | | | | | 108 |
| | चमकप्रश्नः | | | | | | | • | | | | | | | • | | | 116 |
| रुट्ट | (पद्पाठः | | | | | | | | | | | | | | | | | 122 |
| मन | त्रपुष्पम् | | | | | | | | | | | | | | | | | 134 |
| ನ ಶ | ाञान्तय: | | | | | | | | | | | | | | | | | 126 |

॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे क्विं केवीनाम्पूमश्री-वस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमंस्ते रुद्र मन्यवं उतो तु इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृहय॥ या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ईसीः पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्व सर्वां अम्भयन्त्सर्वांश्व यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बुभुः सुमङ्गलः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशत्रुदहार्यः॥ उतेनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुंश्र धन्वंनुस्त्वमुभयोरार्लियोज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्यं शत्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवा उत्त॥ अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिः। या ते हेतिमीं दुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिब्भुज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवे॥ उभाभ्यांमुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्त विश्वतः॥ अथो य इंषुधिस्तव्ऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकालाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय् नर्मः॥

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतंये नमो नमेः सस्पिश्चराय त्विषींमते पथीनां पतंये नमो नमों बस्रुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पतंये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमों भवस्यं हेत्ये जगंतां पतंये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पतंये नमो नमेः सूतायाहंन्त्याय वनांनां पतंये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमों मित्रिणे वाणिजाय कक्षांणां पतंये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषंधीनां पतंये नमो नमं उच्चैर्घोषायाऋन्दयंते पत्तीनां पतंये नमो नमंः कृत्स्रवीताय धावंते सत्वंनां पतंये नमः॥२॥

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ हृतीभ्यंश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो ब्रातेंभ्यो ब्रातंपितभ्यश्च वो नमो नमो गुणेभ्यो गुणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, श्रुष्ठकेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, श्रुत्तिभ्यश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कुमरिभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नमं इषुकुद्धो धन्वकुद्धांश्च वो नमो नमो मृग्युभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमो ॥ ।

नमों भवायं च रुद्रायं च नमंः शर्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कपर्दिनं च व्युंप्तकेशाय च नमंः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीढुष्टंमाय चेषुंमते च नमों ह्रस्वायं च वामनायं च नमों बृहते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वेने च नमो अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नर्मः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥ नमों ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमों मध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघन्यांय च बुध्नियाय च नर्मः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वर्याय च खल्यांय च नम्ः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चाविभन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कविचेने च नमेः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चऽऽहन्न्यांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निष्क्षिणें चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चऽऽयुधिनें च नमेः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः सुत्यांय च पथ्यांय च नमेः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वैशन्तायं च नमः कूप्यांय चावट्यांय च नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमें ईप्रियांय चऽऽत्प्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्यांय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चऽऽलाद्यांय च नमः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय

च॥८॥

नमं इरिण्यांय च प्रपृथ्यांय च नमः कि शिलायं च क्षयंणाय च नमः कपिदिनं च पुल्स्तयं च नमो गोष्ठांय च गृह्यांय च नम्स्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमो हृद्य्यांय च निवेष्यांय च नमः पाश्स्व्यांय च रज्स्यांय च नमः शुष्क्यांय च हिर्त्यांय च नमो लोप्यांय चोल्प्यांय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पृण्यांय च पर्णश्द्यांय च नमो ऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नमं आख्विदते च प्रख्विदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाः हृदयेभ्यो नमो विक्षीण्केभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दिरंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रुद्रायं तवसें कपिर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभंरामहे मितिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा नं उिष्ठातम्। मा नो विधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥

मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्स्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्मधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हांः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तुसद् युवानं मृगं न भीमम्पह्लुमुग्रम्। मृडा जैरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यं तें अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तन्ष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नेः सुमनां भव। पुरमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चंरु पिनांकुं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यमस्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यंर्ण्वै-ऽन्तरिक्षे भ्वा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः श्वां अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिव १ रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पृथां पंथिरक्षंय

ऐलबृदा यृव्युर्धः॥ ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सृकावंन्तो निषक्षिणः॥ य एतावंन्तश्च भूयारंसश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषारं सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामत्रं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि॥११॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्निं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव् बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतांत्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं में विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्यांय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनां प्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्लुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वार्क्चं मे मनंश्च मे चश्चंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामंश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा च मे मिहिमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे वृष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सृत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे श्रीडा च मे मोदंश्च मे जातं च मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे विक्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच मे सुगं च मे सुपर्थं च म ऋद्धं च म ऋद्धिंश्च मे कृतं च मे कृतिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामश्च में सौमनुसर्श्वं में भुद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में

भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धर्ता चं में क्षेमंश्च में धर्तिश्च में विश्वं च में महंश्च में स्विचं में ज्ञार्त्रं च में सूर्श्च में प्रसूर्श्च में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं में उमृतं च में उय्वक्ष्मं च में उनामयच में जीवातुंश्च में दीर्घायुत्वं चं में उनिमृतं च में उभयं च में सूर्या चं में सूर्यिनं च में।३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पुष्टं चं मे पृष्टिश्व मे विभ चं मे प्रभ चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽन्नं च मेऽक्षुंच मे व्रीहयंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गि्रयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च में ऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं चं में लोहं चं में ऽग्निश्चं म् आपश्च में वी्रुधंश्च म् ओषंधयश्च में कृष्टप्च्यं चं में ऽकृष्टप्च्यं चं में ग्राम्याश्चं में प्शवं आर्ण्याश्चं यज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं में वित्तिश्च में भूतं चं में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्मं च में शक्तिश्च मेऽर्थश्च मु एमंश्च मु इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवृता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मे प्रिन्तिश्चं च म् इन्द्रंश्च मे प्रजापितिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥ अर्श्वं मे रिश्नंश्च मेऽदांभ्यश्च मेऽिधेपितिश्च म उपार्श्वं

अर्शुश्च में रिश्मश्च में दिन्यश्च में डिपितिश्च म उपार्शुश्च में इन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं में मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं में प्रतिप्रस्थानश्च में शुक्तश्चं में मुन्थी च म आग्रयणश्चं में वैश्वदेवश्चं में ध्रुवश्चं में वैश्वानुरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं में इतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्चं में वैश्वदेवश्चं में मरुत्वृतीयाश्च में माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं में सावित्रश्चं में सारस्वृतश्चं में पौष्णश्चं में पात्रीवतश्चं में हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बर्हिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलृशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पच्ताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीरङ्गुलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृश्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे ब्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भांश्व मे वृत्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्व मे पश्चावी चं मे त्रिवृत्सश्चं मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्यौही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वृहचं मेऽनृङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चश्चंर्यज्ञेनं कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्त चं मे नवं च म् एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तदंश च मे नवंदश च म् एकंविश्शतिश्च मे त्रयोंविश्शतिश्च मे पश्चंविश्शतिश्च मे स्प्तविश्शितश्च मे नवंविश्शितश्च म् एकंत्रिश्च मे त्रयंस्त्रिश्च मे चतंस्रश्च मेऽष्टो चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शितश्च मे चतुंविश्शितश्च मे उष्टाविश्शितश्च मे द्वात्रिश्च मे पद्विश्शितश्च मे चतुंश्चरवारिश्शच मे पद्विश्शिच मे चत्र्श्चरवारिश्शच मे पद्विश्शिच मे

मे वाजंश्च प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्धा च् व्यिश्वंयश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चािधंपतिश्च॥११॥ इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिरुक्थामदानि शश्सिषद्धिश्चंदेवाः सूंक्तवाचः पृथिंवि मात्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश्शृष्टेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥ पुरुष पुवेद॰ सर्वम्। यद्भृतं यच् भव्यम्। उतामृतुत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावानस्य महिमा। अतो ज्याया ईश्च पूर्रुषः। पादौं ऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौं उस्येहा ऽऽभंवात्पुनेः। ततो विश्वङ्कां ऋगमत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भमिमथों पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषाँ। देवा युज्ञमतंन्वत। वुसुन्तो अस्यऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सुप्तास्यऽऽसन् परि्धयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबेध्नन् पुरुषं पशुम्॥ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पुशू इस्ता इश्चेत्रे वायुव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्सं वृहुतंः। ऋचुः सामांनि जिज्ञरे। छन्दा रेसि जिज्ञेरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभयादेतः। गावों ह जिज्ञे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥ यत्पुरुषुं व्यद्धः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजुन्यः कृतः।

ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुन्धाः शूद्रो अजायत॥ चुन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुन्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्॥ आदित्यवंण् तमंसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाज्हारं। श्रुत्रः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानुमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥ युज्ञेन युज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अद्भः सम्भूतः पृथिव्ये रसाँच। विश्वकर्मणः समवर्त्ताधि। तस्य त्वष्टां विद्धंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयंनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमच्छिन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जुनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशें॥ हीश्चं ते लुक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मंनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुवम्। विश्वं नारायंणं देवमक्षरं पर्मं पदम्। विश्वतः परंमान्नित्यं विश्वं नारायण् हिरम्। विश्वंमेवेदं पुरुषस्तिद्वश्वमुपंजीवति। पतिं विश्वंस्यऽऽत्मेश्वंर् शाश्वंत शिवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं प्रायंणम्। नारायणपंरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायण परः। नारायणः परः। यर्चं किश्चित्रंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपिं वा॥

अन्तंर्बृहिश्चं तत्स्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्तमव्यंयं कृवि संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पृद्मकोश प्रतीकाश्र हृद्यं चाप्यधोमुंखम्। अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुंपिर् तिष्ठंति। ज्वालुमालाकुंलं भाती विश्वस्यऽऽयत्नं महत्। सन्तंत शिलाभिंस्तुलम्बंत्याकोश्यसित्रंभम्। तस्यान्तं सृष्टिर सूक्ष्मं तस्मिन्त्स्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानं-

ग्निर्विश्वाचिंर्विश्वतोमुखः। सोऽग्रंभुग्विभंजिन्तिष्ठन्नाहांरमज्रः किवः। तिर्यगूर्ध्वमंधः शायी रश्मयंस्तस्य सन्तता। सन्तापयंति स्वं देहमापांदतलमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतोयदं-मध्यस्थाद्विद्युष्ठेखेव भास्वरा। नीवारशूकंवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपंमा। तस्याः शिखाया मध्ये प्रमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हिरः सेन्द्रः सोऽक्षरः पर्मः स्वराट्॥ ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरंतं विंरूपाक्षं विश्वरूपाय व नमो नमः।

नारायणायं विद्महें वासुदेवायं धीमहि। तन्नों विष्णुः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा रेस् यो अस्कंभायदुत्तर स्पर्धं विचक्रमाणस्त्रेधोरुंगायो विष्णोर्राटंमसि विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रेष्ट्रेंस्थो विष्णोः स्यूरेसि विष्णोर्धुवमंसि वैष्णवमंसि विष्णवे त्वा॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विम्मे रजारेसि यो अस्कंभायदुत्तंरर सुधस्थं विचक्रमाणस्रोधोरुगायः॥ तदंस्य प्रियम्भिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देव्यवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णौः पदे पर्मे मध्य उत्थ्सं। प्र तद्विष्णुंः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वौ। परो मात्रंया तनुवां वृधान। न ते महित्वमन्वंश्रवन्ति॥ उभे ते विद्य रजंसी पृथिव्या विष्णों देवत्वम्। प्रमस्यं विथ्से। विचंक्रमे पृथिवीमेष एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुंषे दशस्यन्। ध्रुवासों अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षितिः स्जनिंमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचंक्रमे श्तर्चंसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु त्वस्त्तवीयान्। त्वेषः ह्यंस्य स्थविंरस्य नामं॥

॥भूसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - १/प्रपाठकः - ५/अनुवाकः - ३)

भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणाऽन्तिरक्षं मिह्त्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमंत्रादमृत्राद्यायाऽऽदंधे। आऽयङ्गौः पृश्लिरक्रमी-दर्सनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। त्रिष्ट्रशृद्धाम् वि राजित् वाक्पंतुङ्गायं शिश्लिये। प्रत्यंस्य वह द्युभिः। अस्य प्राणादंपानृत्यंन्तश्चरित रोचना। व्यंख्यन् मिह्षः सुवंः॥ यत्त्वां कुद्धः पंरोवपं मृन्युना यदवंत्र्या। सुकल्पंमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामिस। यत्ते मृन्युपंरोप्तस्य पृथिवीमनुं

दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसंबश्च स्माभंरन्।
मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञः सिम्मं दंधातु।
बृह्स्पतिस्तनुतामिमं नो विश्वे देवा इह मांदयन्ताम्। सप्त
ते अग्ने सिमधंः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन।
पुनंस्त्रजा नि वर्तस्व पुनंरग्न इषाऽऽयुंषा। पुनंनः पाहि
विश्वतः। सह र्य्या नि वर्तस्वाऽग्ने पिन्वंस्व धारया।
विश्वपिस्नंया विश्वत्स्परि। लेकः सलेकः सुलेकस्ते
न आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु केतः सकेतः
सुकेत्स्ते न आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवंस्वाः
अदितिर्देवंजूतिस्ते न आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु।

॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - २)

जातवेदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदंः। स नंः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धं दुरिताऽत्यग्निः॥१॥ तामग्निवंणां तपंसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कंर्मफुलेषु जुष्टांम्। दुर्गां देवी र शरंणमहं प्रपंद्ये सुतरंसि तरसे नर्मः॥२॥ अग्ने त्वं पारया नव्यों अस्मान्थ्स्वस्तिभिरतिं दुर्गाणि विश्वां। पूर्श्व पृथ्वी बंहुला नं उुवीं भवां तोकाय तनयाय शं योः॥३॥ विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न नावा दुंरिताऽतिंपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौंऽस्माकं बोध्यविता तनूनांम्॥४॥ पृतना जित र सहंमानमुग्रमग्नि र हुंवेम परमाथ्सधस्थांत्। स नः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वा क्षामंद्देवो अति दुरितात्यग्निः॥५॥ प्रत्नोषिं कमीड्यों अध्वरेषुं सनाच होता नव्यंश्च सित्सं। स्वाश्रीग्ने तनुवं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व॥६॥ गोभिर्जुष्टंमयुजो निषिंक्तं तवेंन्द्र विष्णोरनुसश्चरेम। नाकंस्य पृष्ठमि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

> कात्यायनायं विदाहें कन्यकुमारिं धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयाँत्॥

॥श्रीस<mark>ू</mark>क्तम्॥

हिरंण्यवर्णां हिरंणीं सुवर्णरंजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१॥ तां म् आवंह् जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां हस्तिनांदप्रबोधिनीम्। श्रियंं देवीमुपंह्वये श्रीमांदेवीर्जुषताम्॥३॥

कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवंणां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृंणे॥५॥ आदित्यवंणें तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्चं बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूति-मसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

गुन्धद्वारां दुराध्र्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं

सर्वभूतानां तामिहोपंह्रये श्रियम्॥९॥

मनेसः काममाकूतिं वाचः स्त्यमंशीमहि। पृश्नां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृथि सम्भव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्रीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियंं वासयं मे कुले॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिंणीं पुष्टिं सुवुर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यृष्टिं पिङ्गलां पंद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१४॥

तां म् आवंह् जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिंरण्यं प्रभूतं गावों दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुषानुहम्॥१५॥

> मृहादेव्यै चं विद्यहें विष्णुपृत्यै चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयाँत्॥१६॥

॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१-४४)

मेधादेवी जुषमाणा न आगाँद्विश्वाची भद्रा सुंमनस्यमाना। त्वया जुष्टां नुदमाना दुरुक्तांन् बृहद्वंदेम विदथें सुवीराः। त्वया जुष्टं ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगृतश्रीरुत त्वया। त्वया ज्रष्टश्चित्रं विंन्दते वसु सानों जुषस्व द्रविंणो न मेधे॥ मेधां म् इन्द्रों ददातु मेधां देवी सरंस्वती। मेधां में अश्विनांवुभावार्धत्तां पुष्कंरस्रजा। अप्सरासुं च या मेधा गंन्धर्वेषुं च यन्मनंः। दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषता इ स्वाहाँ॥ आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वंमाना सा मां मेधा सुप्रतींका जुषन्ताम्। मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु।

॥भाग्यसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - ३/प्रश्नः - ८/अनुवाकम् - ९) प्रातरिमें प्रातिरन्द्र हवामहे प्रातिमेत्रा वर्रुणा प्रातरिश्वनां। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमंमुत रुद्र ह्वेम॥१॥ प्रातर्जितं भगंमुग्र हुवेम वयं पुत्रमदितेयी विधर्ता। आर्द्धश्चिद्यं मन्यंमानस्तुरिश्चद्राजां चिद्यं भगं भक्षीत्याहं॥२॥ भग प्रणेतर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुदंवददंन्नः। भगप्रणों जनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिंनृवन्तंः स्याम॥३॥ उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना १ सुमतौ स्याम॥४॥ भगं एव भगवा । अस्तु देवास्तेनं वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वां भग सर्व इञ्जोहवीमि सनों भग पुर एता भेवेह॥५॥ समध्वरायोषसोऽनमन्त दधिक्रावेव शुचंये पदायं। अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथमिवाश्वांवाजिन आवहन्तु॥६॥ अश्वांवतीर्गोमंतीर्न उषासों वीरवंतीः सदंमुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुहांना विश्वतः प्रपीनायूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥७॥ यो माँ उग्ने भागिन ई सन्तमथांभागं चिकींर्षति। अभागमंग्ने तं कुंरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

॥ पवमानसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - १/प्रश्नः - ४/अनुवाकः - ८)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - ५/प्रपाठकः - ६/अनुवाकः - १)

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः। दिधिक्राव्यणों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनः। सुर्भिनो मुखांकरत्। प्रण् आयूर्षेष तारिषत्।

आपो हि ष्ठा मंयो भुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतमो रसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उश्तीरिंव मातरंः। तस्मा अरङ्ग मामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कृश्यपो यास्विन्द्रेः। अग्निं या गर्भं दिधिरे विरूपास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ यासा र राजा वर्रुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्। मधुश्चतः शुचंयो याः पावकास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भृक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

शिवनं मा चक्षुंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचंं मे। सर्वारं अग्नीर रंप्सुषदों हुवे वो मिय वर्चो बलमोजो नि धंत्त॥

पवमानः सुवर्जनंः। पवित्रेण विचंर्षणिः। यः पोता स पुंनातु मा। पुनन्तुं मा देवजुनाः। पुनन्तु मनंवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयवंः। जातंवेदः प्वित्रंवत्। पवित्रंण पुनाहि मा। शुक्रेणं देवदीद्यंत्। अग्ने कत्वा कतूर् रन्। यत्ते प्वित्रम् चिषि। अग्ने वितंतमन्त्रा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रेण सवेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी प्नती देव्यागात्। यस्यै बह्वीस्तुनुवी वीतपृष्ठाः। तया मदेन्तः सधमाद्येषु। वयः स्याम पतेयो रयीणाम्। वैश्वानरो रुश्मिर्भिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मंयो भूः। द्यावापृथिवी पर्यसा पर्योभिः। ऋतावरी युज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्षिष्ठैर्देवमन्मंभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपुनता येनऽऽपों दिव्यं कर्शः। तेनं दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पावमानीरध्येति। ऋषिभिः सम्भृत् रसम्। सर्वर् स पूतमंश्राति। स्वदितं मांतरिश्वना। पावमानीयों अध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृतः रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीर स्पिर्मधूंदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पयंस्वतीः। ऋषिंभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत १ हितम्। पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथों अमुम्। कामान्त्समंधयन्तु नः। देवीर्देवैः समाभृंताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुद्घाहि घृंतश्चतः। ऋषिभिः सम्भृतो रसः। ब्राह्मणेष्वमृत रे हितम्। येन देवाः प्वित्रेण। आत्मानं पुनते सदाँ। तेनं सहस्रंधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं प्वित्रम्ँ। श्तोद्यांम १ हिरण्मयम्। तेनं ब्रह्म विदों व्यम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सहमां पुनातु। सोमंः स्वस्त्या वरुंणः सुमीच्याँ। यमो राजाँ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयंन्त्या पुनातु। भूर्भुवः सुवंः।

तच्छुं योरावृणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उंज्ञहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाः पिनाकी। ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हिवषां घृतेन॥१॥

विभ्राजमानः सरिंरस्य मुध्याद्रोचमानो घर्मरुचिंर्य आगात्। स मृत्युपाशानपनुंद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्तु देवः॥२॥

ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषु गुर्भं युमाद्धात् पुरुरूपं जयन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकमुर्च्यं तुमायुषे वर्धयामो घृतेन॥३॥

श्रियं लक्ष्मीमौबलामंम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेंत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनिर्ं सरूपामिहायुषे तर्पयामों घृतेन॥४॥ दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपां विरूपाः। ससूनवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतमिदं जुषन्ताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाँः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमध्नंन्तु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधां घृतेन मा नः प्रजा॰ रीरिषो मौत वीरान्॥६॥

एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनंस्य गोपाः। यमप्येति भुवन साम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषेत्त देवः॥७॥

वसून् रुद्रांनादित्यान् मरुतोऽथ साध्यान् ऋंभून् यक्षान् गन्धर्वाङ्श्च पितृङ्श्च विश्वान्। भृगून् सर्पाङ्श्चाङ्गिरसोऽथ सर्वान् घृत्रु हुत्वा स्वायुष्या महयांम शृश्वत्॥८॥

विष्णो त्वं नो अन्तंमः शर्मं यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्चत उथ्मं दुहते अक्षितम्॥९॥

॥ॐ शान्तुः शान्तुः शान्तिः॥



आयुंष्टे विश्वतों दधद्यम्भिर्वरैंण्यः। पुनेस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मर् सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने ह्विषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोंनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ स्त्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययंन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशं पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा र रेता रेसि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वयर हिते नेव जयामिस। गामश्वं पोषिये्व्या स नो मृडाती्दशें॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥

प्रवंः शुक्रायं भानवं भरध्वः हृव्यं मृतिं चाग्नये सुपूंतम्॥ यो दैव्यानि मानुषा जनूः ध्यन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अप्रश्चन जरसा मरेते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेंभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतंः सोम् वृष्णियम्। भवा वाजंस्य

सङ्ग्थे॥ अप्सु में सोमों अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापंश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षत्येकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्।

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिमष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं चं। पुनंः कृण्व॰ स्त्वां पितरं युवांनम्नवाता ॰ सीत्विय तन्तुमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस विष्णों पृष्ठमंसि विष्णोः श्रेष्ठैंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों त्वा। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहाँ द्विमद्विभाति ऋतुं मुझनेंषु।
यद्दी दयच्छवं सर्तप्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥
इन्द्रं मरुत्व इह पांहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं।
तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति क्वयः सुयृज्ञाः॥
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः।
सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवः॥
अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोर्भिस्नंवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयः स्याम् पत्यो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्वस्ता वंहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥ कयां नश्चित्र आभुंवदूती सदावृधः सखाः। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गोः पृश्निरक्रमीदसंनन्मातरं

शिवंष्ठया वृता। आऽयङ्गोः पृश्लिंरक्रमीदसंनन्मातर् पुनंः। पितरंं च प्रयन्त्सुवंः। यत्तं देवी निर्ऋतिराब्बन्ध् दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तिद्वष्याम्यायुंषो न मध्यादथाजीवः पितुमंद्धि प्रमुक्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नंकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गृप्राणाः स्विधितिर्वनांनाः सोमः प्वित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तम्स्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युंवस्व॥

अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय केतवे नमः॥९॥ ॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नमंः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – १)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ३/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः –१)

अग्निर्नः पातु कृत्तिंकाः। नक्षेत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमांसां विचक्षणम्। ह्विरासं जुंहोतन। यस्य भान्ति र्ष्णयो यस्यं केतवंः। यस्येमा विश्वा भुवंनानि सर्वां। स कृत्तिंकाभि-रिभसंवसांनः। अग्निर्नो देवः सुंविते दंधातु॥१॥

प्रजापंते रोहिणी वेंतु पत्नीं। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभांनुः। सा नों यज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवेंम श्ररदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां रूपाणिं प्रतिमोदंमाना। प्रजापंति हिवषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजां मृगशीर्षेण आगन्नं। शिवं नक्षंत्रं प्रियमंस्य धामं। आप्यायंमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजंमाने दधातु। यत्ते नक्षंत्रं मृगशीर्षमस्तिं। प्रिय॰ राजन् प्रियतंमं प्रियाणांम्। तस्मैं ते सोम ह्विषां विधेम। शं नं एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे॥३॥

आर्द्रयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानां पतिंरिघ्नयानांम्। नक्षंत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नः प्रजा॰ रीरिष्नमोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिणो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षंत्रं जुषता १ ह्विर्नः। प्रमुश्रमां नौ दुर्तितान् विश्वाः। अपाघशः । सन्नुदतामरांतिम्॥४॥

पुनर्नो देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनर्वसू नः पुनरतां यज्ञम्। पुनर्नो देवा अभियन्तु सर्वे। पुनः पुनर्वो ह्विषां यजामः। एवा न देव्यदितिरन्वा। विश्वस्य भूत्री जगंतः प्रतिष्ठा। पुनर्वसू हिवषां वर्धयन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायंमानः। तिष्यं नक्षंत्रम्भि सम्बंभूव। श्रेष्ठां देवानां पृतंनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिर्नः परिपातु पृश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पतंयः स्याम॥६॥

इदः सर्पेभ्यों ह्विरंस्तु जुष्टम्ं। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नः सूर्पासो हवमागंमिष्ठाः। ये रोचने सूर्यस्यापिं सूर्पाः। ये दिवं देवीमनुंस्श्चरंन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्ं। तेभ्यः सर्पेभ्यो मधुंमज्जहोमि॥७॥

उपंहूताः पितरो ये मघासुं। मनोजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमागंमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनंग्निदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चं विद्मयाः उं च न प्रविद्मा। मघासुं यज्ञः सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥ गवां पितः फल्गुंनीनामिस् त्वम्। तदंर्यमन् वरुणिमत्र चारुं। तं त्वां वय र संनितार र सनीनाम्। जीवा जीवंन्तमुप् संविशेम। येनेमा विश्वा भुवंनािन सिञ्जंता। यस्यं देवा अनुसंयन्ति चेतंः। अर्यमा राजाऽजर्स्तु विष्मान्। फल्गुंनीनामृष्भो रोरवीति॥९॥

श्रेष्ठों देवानां भगवो भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनी्स्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रम्जर् स्वीर्यम्। गोमदश्वंवदुप्सन्नुं-देह। भगों ह दाता भग इत्प्रंदाता। भगों देवीः फल्गुंनी्राविवेश। भगस्येत्तं प्रंस्वं गंमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥१०॥

आयांतु देवः संवितोपंयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहुन् हस्त र् सुभगं विद्यनापंसम्। प्रयच्छंन्तं पपृंरिं पुण्यमच्छं। हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन् प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारम् संविता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवातिं यज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षंत्रम्भ्यंति चित्राम्। सुभगं संसं युव्ति श्रे रोचंमानाम्। निवेशयंत्रमृतान्मर्त्या श्रेश्च। रूपाणि पि श्रे शन् भवंनानि विश्वा। तन्नस्त्वष्टा तद् चित्रा विचंष्टाम्। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अंस्तु मह्मम्। तन्नः प्रजां वीरवंती श्रमोतु। गोभिनीं अश्वैः समंनक्त यज्ञम्॥१२॥

वायुर्नक्षंत्रम्भ्यंति निष्ट्यांम्। तिग्मश्रंङ्गो वृष्भो रोरुवाणः। समीरयन् भवंना मात्रिश्वां। अप द्वेषाः सि नुदतामरातीः। तन्नो वायुस्तदु निष्ट्यां शृणोतु। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अस्तु मह्मम्। तन्नो देवासो अनुंजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वां॥१३॥

दूरम्स्मच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणतां तद्विशांखे। तत्रो देवा अनुमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभयं नो अस्तु। नक्षंत्राणामिधेपत्नी विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भुवंनस्य गोपौ। विषूचः शत्रूनप्बाधंमानौ। अप क्षुधं नुदतामरांतिम्॥१४॥ पूर्णा पृश्चादुत पूर्णा पुरस्तांत्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधिसंवसंन्तः। उत्तमे नाकं इह मांदयन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवतिः स्जोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभंमाना। आप्याययंन्ती दुरितानि विश्वां। उरुं दुहां यजंमानाय यज्ञम्॥१५॥

ऋद्धास्मं ह्व्यैर्नमंसोप्सद्यं। मित्रं देवं मित्र्धयं नो अस्तु। अनूराधान् ह्विषां वर्धयंन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तौत्। अनूराधा स् इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पृथिभिर्देवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतैर्न्तरिक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामनु नक्षंत्रमेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र् तूर्ये तृतारं। तस्मिन्वयम्मृतं दुहानाः। क्षुधं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुरन्दरायं वृष्भायं धृष्णवें। अषांढाय् सहंमानाय मी्ढुषें। इन्द्राय ज्येष्ठा मधुमदुहांना। उरुं कृणोतु यर्जमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा। गोभिर्नक्षंत्रं प्रशुभिः समंक्तम्। अहंर्भ्याद्यजंमानाय मह्यम्। अहंर्नो अद्य सुंविते दंधातु। मूलं नक्षंत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजाये शिवमंस्तु मह्यम्॥१८॥ या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूवः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यासांमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः शइ स्योना भंवन्तु। याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैशन्तीरुत प्रांसचीर्याः। यासांमषाढा मधुं भृक्षयंन्ति। ता न आपः शइ स्योना भंवन्तु॥१९॥

तन्नो विश्वे उपं शृण्वन्तु देवाः। तदंषाढा अभिसंयंन्तु यज्ञम्। तन्नक्षंत्रं प्रथतां पृशुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्। शुभाः कन्यां युवतयः सुपेशंसः। कर्मकृतः सुकृतों वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् ह्विषां वर्धयंन्तीः। अषाढाः काम्मुपंयान्तु यज्ञम्॥२०॥

यस्मिन् ब्रह्माभ्यजंयत्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूंच सर्वम्। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियंं दधात्वह्रंणीयमानम्। उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विचंष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतंनाः सञ्जयम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्तिं श्रोणाम्मृतंस्य गोपाम्। पुण्यांमस्या उपंश्णोमि वाचम्। मृहीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचीं मेनाः ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुंरुरुगायो विचंक्रमे। मृहीं दिवं पृथिवीम्न्तिरक्षम्। तच्छ्रोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्यः श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तात्। संवृत्स्रीणंम्मृत ई स्वस्ति। यज्ञं नंः पान्तु वसंवः पुरस्तात्। दक्षिण्तोऽभियंन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षंत्रमभि संविशाम। मा नो अरांतिरघश १ साऽगन्नं॥ २३॥

क्षत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाः श्वतिभेष्वविसेष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्वतः सहस्रां भेषुजानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षत्रः श्वतिभेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्धेषजानि॥२४॥

अज एकंपादुदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां भूतानिं प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रंस्वं यंन्ति सर्वें। प्रोष्ठपदासों अमृतंस्य गोपाः। विभ्राजमानः समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहदगुन्द्याम्। तक्ष्यं देवमुजमेकंपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुंयन्ति

सर्वे॥२५॥

अहिंबुंध्रियः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुंषाणाम्। तं ब्राँह्मणाः सोम्पाः सोम्यासंः। प्रोष्ठपदासों अभिरंक्षन्ति सर्वे। चत्वार् एकंम्भि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् वदंन्ति। ते बुंध्रियं परिषद्य स्तुवन्तः। अहिर् रक्षन्ति नर्मसोपसद्यं॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थांम्। पुष्टिपतीं पशुपा वाजंबस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पृशून् रेक्षतु रेवतीं नः। गावों नो अश्वार् अन्वेतु पूषा। अन्नर् रक्षंन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर् सनुतां यजंमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्धिनांवश्वयुजोपंयाताम्। शुभुङ्गमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षत्रः ह्विषा यजन्तौ। मध्वासम्पृक्तौ यजुंषा समक्तौ। यो देवानां भिषजौं हव्यवाहौ। विश्वंस्य दूतावमृतंस्य गोपौ। तौ नक्षत्रं जुजुषाणोपंयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंवान् विचेष्टाम्। लोकस्य राजां मह्तो महान् हि। सुगं नः पन्थामभंयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यषिश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र॰ हविषां यजाम। अपं पाप्मानं

भरंणीर्भरन्तु॥२९॥

निवेशनी सङ्गर्मनी वसूनां विश्वां रूपाणि वसून्यावेशयन्ती। सहस्रपोष र सुभगा रराणा सा न आगन्वर्चसा संविदाना॥ यत्ते देवा अदंधुर्भाग्धेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। सा नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे र्यिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैं स्तुष्टुवा र संस्तृनूभिः। व्यशंम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवलं कर्तांऽसि। त्वमेव केवलं धर्तांऽसि। त्वमेव केवलं हर्तांऽसि। त्वमेव सर्वं खिल्वदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मांऽसि नित्यम्॥१॥

ऋतं वृच्मि। संत्यं वृच्मि॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वृक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पृश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्। अवाध्रात्तांत्। सर्वतो मां पाहि पाहिं समुन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वों जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वंस्तिष्ठ्रति। सर्वं जगदिदं त्विय लयंमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नुभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमितां पदानि॥५॥

त्वं गुणत्रंयातीतः। त्वम् अवस्थात्रंयातीतः। त्वं देहत्रंयातीतः। त्वं कालत्रंयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रंयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायंन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गुणादिं पूर्वमुचार्य वर्णादिं तंदनन्तरम्। अनुस्वारः पंरत्रः। अर्धन्दुलसितम्। तारंण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चौन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तंररूपम्। नादः सन्धानम्। स्र हिता सन्धः। सेषा गणेशविद्या। गणेक ऋषिः। निचृद्गायंत्रीच्छुन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥७॥

पुकदन्तायं विद्यहें वक्ततुण्डायं धीमहि।
तन्नों दन्ती प्रचोदयाँत्॥८॥
पुकदन्तं चंतुर्ह्स्तं पाशमंङ्क्ष्श्यधारिणम्।
रदं च वर्रदं हुस्तैर्बिभ्राणं मूषक्ष्वजम्॥
रक्तं लम्बोदंरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानंलिप्ताङ्गं रक्तपुष्यैः सुपूजितम्॥
भक्तांनुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युंतम्।
आविर्भूतं चं सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायतिं यो नित्यं स योगी योगिनां वर्रः॥९॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविद्रौर्नं बाध्यते। स सर्वतः सुखंमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रंमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्यति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविद्रो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भ्वति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साधयेत्॥११॥

अनेन गणपितमिभिषिश्चिति स वाग्मी भवृति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपित स विद्यावान् भविति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्र बिभेति कदांचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजिति स वैश्रवणोपंमो भ्वति। यो लाजैर्यजिति स यशोवान् भ्वति स मेधांवान् भ्वति। यो मोदकसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलमंवाप्नोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजिति स सर्वं लभते स सर्वं लभ्ते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्रांहयित्वा। सूर्यवर्चस्वीं भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जत्वा सिद्धमन्त्रों भवति। महाविद्यात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युंपनिषंत्॥१४॥

सह नांववत्। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः॥

अपैतु मृत्युर्मृतं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनंः शीयता र रियः स च तान्नः शचीपितः॥१॥ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतंरो देवयानात्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नंः प्रजा रीरिषो मोत वीरान्॥२॥

वार्तं प्राणं मनंसाऽन्वा रंभामहे प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नो मृत्योस्नायतां पात्वश्हंसो ज्योग्जीवा जरामंशीमहि॥३॥

अमुत्र भूयादध् यद्यमस्य बृहंस्पते अभिशंस्तेरम्ंश्रः। प्रत्यौहतामृश्विनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचीभिः॥४॥ हिर्॰ हरंन्तमनुंयन्ति देवा विश्वस्येशांनं वृष्मं मंतीनाम्। ब्रह्म सरूपमनुंमेदमागादयंनं मा विवंधीर्विक्रंमस्व॥५॥ शल्केर्श्निमंन्थान उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोरं-ऋध्वाऽतिं मृत्युं तंराम्यहम्॥६॥

मा छिंदो मृत्यो मा वंधीर्मा मे बलं विवृंहो मा प्रमोंषीः। प्रजां मा में रीरिष् आयुंरुग्र नृचक्षंसं त्वा ह्विषां विधेम॥७॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥८॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नों रुद्र भामितो वंधीरहविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयङ् स्याम् पत्यो रयीणाम्॥१०॥

यतं इन्द्र भयांमहे ततों नो अभयं कृधि। मधंवन्ख्गि तव तन्नं

ऊतये विद्विषो विमृधों जिह॥११॥ स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधों वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एंतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः॥१२॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥१३॥ अपंमृत्युमपक्षुधम्। अपेतः शपर्थं जिह। अर्था नो अग्र आवंह। रायस्पोष ५ सहस्रिणम्॥१४॥ ये ते सहस्रमयुत्ं पाशाः। मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् यज्ञस्ये माययाँ। सर्वानवंयजामहे॥१५॥ जातवेदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदंः। स नंः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धंं दुरिताऽत्यग्निः॥१६॥ भूर्भुवः स्वंः। ओजो बलम्। ब्रह्मं क्षत्रम्। यशों महत्। सत्यं तपो नामं। रूपमुमृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मनु आयुः। विश्वं यशो मुहः। सुमं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानुरो यदि वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्ददभ्यावंवृत्स्व॥१७॥ मृत्युर्निश्यत्वायुर्वर्धतां भूः। मृत्युर्निश्यत्वायुर्वर्धतां भुवः। मृत्युर्नश्यत्वायुर्वर्धता स्युवंः। मृत्युर्नश्यत्वायुर्वर्धतां भूर्भुवः सुवैः। मृत्युर्नश्यत्वायुर्वर्धताम्॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



तितिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - ३/अनुवाकः - १५)
हिर् हर्नन्तमनुंयन्ति देवाः। विश्वस्येशानं वृष्मं मंतीनाम्।
ब्रह्म सरूपमनुंमेदमागात्। अयंनं मा विवंधीर्विक्रंमस्व। मा
छिदो मृत्यो मा वंधीः। मा मे बलं विवृहो मा प्रमीषिः।
प्रजां मा मे रीरिष् आयुंरुग्र। नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम।
सद्यश्चंकमानायं। प्रवेपानायं मृत्यवे॥१॥
प्रास्मा आशां अशृण्वन्। कामेनाजनयन्पुनंः। कामेन मे
काम् आगात्। हृदंयाद्भृदंयं मृत्योः। यदमीषांमदः प्रियम्।
तदेतूपमाम्भि। परं मृत्यो अनु परेहि पन्थांम्। यस्ते स्व
इतरो देवयानात्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि। मा नंः प्रजाः
रीरिषो मोत वीरान्। प्र पूर्वं मनसा वन्दंमानः। नाधमानो
वृष्मं चर्षणीनाम्। यः प्रजानांमेकराण्मानुषीणाम्। मृत्यं
यंजे प्रथमजामृतस्यं॥२॥

॥ महान्यासः॥ ॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्नसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमः॥ या त् इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।
महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥
अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयता रियः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।
शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥
ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वायः
नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गायः
नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णालिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः।
दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः। शर्वायः
नमः। शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवलिङ्गायः
नमः। जवलाय नमः। जवललिङ्गाय नमः। आत्माय नमः।
आत्मलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः।
एतत्सोमस्यं सूर्यस्य सर्वलिङ्गः स्थाप्यति पाणिमन्नं
पवित्रम्।

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिष्ठङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्याय्स्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



॥पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुंषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैंभ्योऽथ् घोरैंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भुवोद्भवाय नर्मः॥

प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करिहतं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवतें रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST) वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं विम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवतं रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षिट्नंशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरिमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पश्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥ ॐ नमो भगवतें रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या तें रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ शिखायै नमः॥ (TUFT) अस्मिन् मंहत्यंर्णवें उन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD) सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD) ह॰ सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदतिंथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदेतसद्योमसदजा गोजा ऋतजा अंद्रिजा ऋतं बृहत्॥ भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS) त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमंव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES) नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्यांय च सरस्यांय च नमों नाद्यायं च वैशन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS) मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥

नासिकायै नमः॥ (NOSE)

अवृतत्य धनुस्त्व र सहंस्राक्ष शतेंषुधे॥

निशीर्यं शुल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठौः शुर्वा अधः, क्षंमाचुराः।

तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ५ रुद्रा उपंश्रिताः।

तेषा 🖞 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें।

उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या तें हेतिर्मीं दुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः।

तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिंभुज॥

उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिंणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परिं त्वेषस्यं दुर्मितिरंघायोः।

अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनंयाय मृडय॥

मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS) ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणंः। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS) सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमंः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गर्षाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS) वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमंः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलांय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मंनाय नमंः॥ तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS) अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS) तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS) ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये-ऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT

AND BACK)

नमों वः किरिकेभ्यों देवाना इदंयेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमों गुणेभ्यों गुणपंतिभ्यश्च वो नमंः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धनुः कपूर्दिनो विश्लियो बार्णवा उत।

अनेशत्रुस्येषंव आुभुरंस्य निष्क्षिंः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरकं आसीत्। सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवषां विधेम॥

नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव।

प्रमे वृक्ष आयुंधन्निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥

कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासंः कपूर्दिनंः। तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ गृह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS) ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS) स शिरा जातवेंदा अक्षरं परमं पदम्। वेदांना १ शिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥ अपानाय नमः॥ (ANUS) मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS) एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूर्जवतोऽती-ह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES) स॰सृष्टजिथ्सोमपा बांहुशध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिंहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा र् अपबार्धमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES) विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥
गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)
ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः।
तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥
पादाभ्यां नमः॥ (FEET)
अध्येवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्।
अही ईश्च सर्वाञ्चम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यंः॥
कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS

TOUCHING SHOULDERS)

नमों बिल्मिनें च कव्चिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतस्नेनायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)
नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें।
अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥
नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERSACROSS THE

THREE EYES)

प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्गियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEXAND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON

LEFT PALM)

य पुतावंन्तश्च भूया ५ सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे।

तेषा र सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि॥ इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)

॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्प्ने नमः। नं नासिकाय नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भुवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मनाय नमः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ अघोरैभ्योऽथ् घोरैभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥ तत्पुरुंषाय विद्यहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ मुखाय नमः॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिंपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिंपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्प्रे नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः।

अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शिक्तः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धार्थे जपे विनियोगः॥ हंसां अङ्गृष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसीं मध्यमाभ्यां नमः। हंसीं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखाये वषट्। हंसें कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥ ॥ध्यानम्॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥ हंस हंसायं विदाहं परमहंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयाँत्॥

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भृवः सुवरोम्।
[ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रंमिवृतार्मिन्द्र् हवेहवे सुहव् श्रूरिमन्द्रम्।
हुवे नु शृक्रं पुंरुहूतिमिन्द्रं स्वस्ति नो मृघवां धात्विन्द्रंः॥
लं भूर्भृवः सुवंः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुरिधपतय
ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो
वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥] ॥१॥
ॐ भूर्भृवः सुवरोम्।
[नं] रं। त्वन्नो अग्ने वर्रणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं
यासिसीष्ठाः।

यजिंश्रो वहिंतमः शोशंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमंमुग्ध्यस्मत्॥ रं भूर्भुवः सुर्वः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये-ऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥] ॥२॥ ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मों] हं। सुगं नः पन्थामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां।

यस्मिन्नेनम्भ्यिषेश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र ह्विषां यजाम॥ हं भूर्भुवः सुवंः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥ ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[भं] षं। असुन्वन्त्मयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्कंरस्यान्वंषि।

अन्यम्स्मिदिंच्छ् सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥

षं भूर्भुवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-

भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥ ॐ भूर्भृवः सुवरोम्। [गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः।

अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशरस मा न आयुः प्रमोषीः॥ वं भूर्भवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥]॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[वं] यं। आ नो नियुद्धिः श्वितनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपंयाहि यज्ञम्।

वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥

यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो

वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥]

॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[तें] सं। व्यर सोम ब्रुते तवं। मनस्तुनूषु बिभ्रंतः।

प्रजावंन्तो अशीमहि॥

सं भूर्भुवः सुवेः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनुं जर्गतस्तुस्थुष्स्पतिम्। धियुं जिन्वमवंसे हुमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदेसामसंद्वृधे रेक्षिता पायुरदेब्धः स्वस्तये॥ शं भूर्भवः सुवेः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥] ॥८॥ ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भर्रहृतौ सुजोषाः ।

यः शंसते स्तुवते धायिं पज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु

देवाः॥

खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्प्रिस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[यं] हीं। स्योना पृंथिवि भवांऽनृक्ष्रा निवेशनी।

यच्छांनः शर्म सुप्रथाः॥

हीं भूर्भुवः सुवंः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥]॥१०॥



॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मां हि॰सीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ आं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ विह्नंरिस हव्यवाहंनो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ आं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ इं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ श्वात्रोंऽसि प्रचंता रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ इं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ईं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ तुथोऽसि विश्ववंदा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ईं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ उं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ उशिगंसि कवी रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ उं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नेत्रयोः स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ऊं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऊं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ शुन्थ्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ लं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ सम्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हि॰सीः॥ लं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ॡं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ परिषद्योऽसि पवंमानो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॡं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ एं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ प्रतक्षांऽसि नमंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ एं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऐं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऐं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॐ। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ऋतधांमाऽसि सुवंज्योंती रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ औं। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥ ब्रह्मंज्योतिरसि सुवंधामा रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ औं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अजौंऽस्येकंपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हि॰सीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ अः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अहिंरिस बुिध्रयो रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ अः ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥

॥गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञः सिम्मं दंधातु। या इष्टा उषसो निम्नुचेश्च ताः सन्दंधामि ह्विषां घृतेनं॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबौध्यग्निः स्मिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्या इंव प्रवयामुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रते नाकुमच्छं॥ नाभ्य नमः॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता रेसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥ मूर्धानं दिवो अर्तिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातमृग्निम्। क्विर सम्राज्मितिथां जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभि-वंस्ताम्।

उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जर्यन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेंदा यदिं वा पावकोऽसिं। वैश्वान्रो यदिं वा वैद्युतोऽसिं।

शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्दद्भ्यावेवृत्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥

॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मुन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मुन्नात्मुन्नित्यामंत्रयत। तस्मै दश्म १ हूतः प्रत्यंशृणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामेषः। तं वा एतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम १ हतः प्रत्यंशृणोत्।

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स सप्तहूंतोऽभवत्। सप्तहूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत श् सप्तहूंत श्रू सन्तम्। सप्तह्ोतेत्याचं क्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं षृष्ठ हूतः प्रत्यंशृणोत्। स षड्ढूंतोऽभवत्। षड्ढूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत एषड्ढूंत् रू सन्तम्। षड्ढ्योतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं पश्चम हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं पश्चंहूत् रू सन्तम्। पश्चंह्योतत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै चतुर्थ हृतः प्रत्येशृणोत्। स चतुंर्हृतोऽभवत्। चतुंर्हृतो हु वै नामै्षः। तं वा एतं चतुंरहूत् सन्तम्। चतुंहींतत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ तमंत्रवीत्। त्वं वे मे नेदिष्ठ हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति। तस्मान्नु हैना् श्रुश्चतुंरहोतार् इत्याचंक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणा् हह्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मंणो भवति। य एवं वेदं। आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः॥

येनेदं भूतं भुवंनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।

येनं यज्ञस्त्रायतं सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरेन्ति धीरा यतो वाचा मनेसा चारु यन्ति। यत्सम्मित्मनुंस्ंयन्ति प्राणिन्स्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदर्थेषु धीरौः। यदंपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानंमृत चेतो धृतिश्च यञ्चोतिरन्तर्मृतं प्रजासुं। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥४॥ सुषार्थिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। ह्लप्रतिष्ठं यदंजिरं जिवेष्ठं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥५॥
यस्मिनृचः साम् यजूरंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता
रथनाभाविवाराः। यस्मिरंश्चित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे
मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥६॥
यदत्रं षष्ठं त्रिशतरं सुवीरं यज्ञस्यं गृह्यं नवनावमाय्यम्।
दशं पश्च त्रिर्शतं यत्परं च तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७॥
यज्ञाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तद्ं सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं
ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥८॥
यनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः।
तदेवाग्निस्तमंसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तिरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशंश्च। येनेदं जग्द्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१०॥ ये मनो हृदंयं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरिमः। ते श्रोत्रे चक्षंषी स्श्चरंन्तं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तंपरं च यत्। सूक्ष्मौत्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कत्पमंस्तु॥१२॥ एकां च दृश शतं चं सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च परार्धश्च तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१३॥ ये पश्च पश्चादश शत र सहस्रमयुतं न्यंर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टंकास्तर शरीरं तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। यस्य योनिं परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१५॥ यस्येदं धीराः पुनन्तिं क्वयो ब्रह्माणंमेतं त्वां वृणत् इन्दुंम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौरांकाशं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१६॥

परौत्परतंरं चैव यत्पराचैव यत्परम्। यत्परौत्परंतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कत्पर्मस्तु॥१७॥

परौत्परतंरो ब्रह्मा तृत्परौत्पर्तो हंरिः। तृत्परोत्परंतोऽधीशुस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१८॥

या वेंदादिषुं गायत्री सर्वव्यांपी महेश्वंरी। ऋग्यजुंः सामांथर्वैश्च तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥

प्रयंतः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥ योऽसौं सर्वेषुं वेदेषु पठातें ह्यज् इश्वंरः। अकार्यो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बलेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलांस्शिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालंये। देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥

विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सम्बाहुभ्यां नमंति सम्पतंत्रैर्घावांपृथिवी जनयंन्देव एकस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत सर्वशांश्वम्यं विंदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२७॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमृत मा ने उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिष्स्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीरहविष्मंन्तो

नर्मसा विधेम ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥ ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टंमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तम १ हृदे। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तरमें रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३१॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूवं। य ईशें अस्य द्विपदश्चतुंष्पदः कस्मैं देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥ य औत्मुदा बंलुदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिषं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मैं देवायं हविषां विधेम् तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥ गुन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणींम्। ईश्वरी ५ सर्वभूतानां

तामिहोपंह्वये श्रियं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इद॰ शिवंसङ्कल्प॰ सदा ध्यायंन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥

॥पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्ग्लम्॥ पुरुष प्वेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतुत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौंऽस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांऋामत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथों पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषां। देवा यज्ञमतंन्वत। अंस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सुप्तास्यऽऽं-सन्परिधर्यः। त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन्पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्सं व-

हुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू श्रस्ता श्रश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्सं वृहुतंः। ऋचः सामानि जिज्ञेरे। छन्दा श्रेसि जिज्ञिरे तस्मात्।

यजुस्तस्मांदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभ्यादंतः। गावों ह जिज्ञे तस्माँत्। तस्माँज्ञाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तर्दस्य यद्वेश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णो चौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंस्स्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रुक्तः प्रविद्वान्प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भविति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः॥

शिरसे स्वाहा॥

॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्धः सम्भूतः पृथिव्ये रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्तताधिं। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहिंतः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंबुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशैं॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मंनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – ४/प्रश्नः – ६/अनुवाकः – ४)

आृशुः शिशांनो वृष्भो न युध्मो घंनाघृनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनोऽनिमिष एंकवीरः शृत १ सेनां अजयत् साकमिन्द्रेः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्चवनेनं धृष्णुनां। तिदन्द्रेण जयत् तत्संहध्वं युधों नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सिनंषुङ्गिभिर्वृशी सङ्स्रष्टा स युध् इन्द्रों गुणेनं। स्र्मृष्ट्रजिथ्सोम्पा बांहुश्रध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्राः अपबाधंमानः। प्रमुञ्जन्तसेनाः प्रमुणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथांनाम्। गोत्रभिदं गोविदं वर्ज्ञबाहुं जयंन्तम् प्रमृणन्तमोजंसा। इमः संजाता अनुं वीरयध्वमिन्द्रः सखायोऽनु सः रभध्वम्। बृल्विज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहंस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रंमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः श्तमंन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यों उस्माक् से सेनां अवतु प्र युत्स्। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पित्दिक्षिणा यज्ञः पुर एंतु सोमः। देवसेनानांमिभभञ्जतीनां जयंन्तीनां मरुतों यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य वृष्णो वर्रुणस्य राज्ञं आदित्यानां मरुता स्वर्णे उग्रम्। महामेनसां भवनच्यवानां घोषों देवानां जयंतामुदंस्थात्। अस्माक्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जंयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानुं देवा अवता हवेषु। उद्धंर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वनां मामकानां महा सि। उद्दंत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषः। उप

प्रेत जयंता नरः स्थिरा वंः सन्तु बाहवंः। इन्द्रों वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवसृष्टा परां पत् शरंब्ये ब्रह्मस्शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रों नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥



॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपृत्येक्मितिरिक्तं यावंन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कमंकरं पश्नाः शर्मास्ति शर्म यजंमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्थ आखुस्ते रुद्र पृशुस्तं जुंषस्वेष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसीत। सुगं मेषायं मेष्यां अवाम्ब रुद्रमदिम्ह्यवं देवं त्र्यम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः कर्द्यथां नो वस्यंसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययात। त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव

बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतांत्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूर्जवतोऽतीृह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमतिंरिक्तम्। जनिष्यमांणा प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघांरयति। यदंभिघारयेंत्। अन्तरवचारिण ई रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्ध रुद्रस्यं भागधेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत। असौ तें पुशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमसमै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पशुरितिं ब्र्यात्। न ग्राम्यान् पृशून् हिनस्तिं। नऽऽरुण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पड्वींशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पर्णेनं जुहोति। सुग्घ्यंषा। अथो खलुं। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्ततं एव रुद्रं निरवंदयते। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकयेत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसां। तया वा एष हिनस्ति। यर हिनस्ति। तयैवैनर्

सह शंमयित। भेषुजं गव इत्यांह। यावंन्त एव ग्राम्याः प्रावंः। तेभ्यों भेषुजं कंरोति। अवांम्ब रुद्रमंदिम्हीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। त्र्यंम्बकं यजामह् इत्यांह। मृत्योमुंक्षीय माऽमृतादिति वावेतदांह। उत्किरन्ति। भगंस्य लीपसन्ते। मूतं कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतंऽवसं करोति। ताहगेव तत्। एष तं रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्ये। अप्रंतीक्षमायंन्ति। अपः परिषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्ये। प्रवा पुतेस्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बक्रेश्चरंन्ति। आदित्यं च्रं पुनरेत्यं निर्वंपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतिंतिष्ठन्ति।

॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रशः - ३/अनुवाकः - १४)
त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मारुतं पृक्ष
ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्ग्यस्त्वं पूषा विधृतः पांसि नु
त्मनां। आ वो राजानमध्वरस्य रुद्र होतार सत्ययज् र रोदंस्योः। अग्निं पुरा तनिय्नोर्चित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुष्वम्। अग्निर्होता नि षंसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुरभावं लोके। युवां किवः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गृह्याम्। स आयुराऽगांत्सुर्भिवसांनो भृद्रामंकर्देवहूंतिं नो अद्य। अर्ऋन्दद्गिः स्तुनयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधंः सम्अत्र। सद्यो जंजानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूंनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवंनानि यस्मिन्त्स सौभंगानि दिधिरे पांवके। तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्रे कामांय येमिरे। अश्याम् तं कामंमग्ने तवोत्यंश्यामं र्यि रंयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजंमि वाजयंन्तोऽश्यामं सुम्रमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्नें सुमन्तमा भर। वसो पुरुस्पृह रे र्यिम्। स श्वितानस्तंन्यत् रोचन्स्था अजरेभिनांनदिद्धियविष्ठः। यः पांवकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरंनुयाति भवन्नं। आयुष्ठे विश्वतो दधद्यम्गिर्वरेण्यः। पुनस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मरे सुवामि ते। आयुर्वा अंग्ने ह्विषो जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

तस्मैं ते प्रतिहर्यते जातंवेदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निर्स्मद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयंमुप्सु नृमणा अजंस्रुमिन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने बृहद्विरोचसे। त्वं घृतिभिराहुंतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयत्सुरेताः। आ यदिषे नृपितं तेज आनृद्धुचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकैं। अग्निः शर्धमनवद्यं युवानः स्वाधियं जनयत्सूदयंच। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वंः। अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्यं प्रासहां रियम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सहर् रियर सहस्व आ भरा त्वर हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वेधसें। स्तोमैर्विधेमाग्नयें। वृद्मा हि सूनो अस्यंद्मसद्वां चृक्ते अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः।

अग्र आयू १ पवस् आ सुवोर्जिमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनांम्। अग्रे पवंस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्पोष १ रियं मियं। अग्ने पावक रोचिषां मुन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् विश्व यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवा १ इहऽऽवंह। उपं यज्ञ १ ह्विश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कृविः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजंन्त ईरते। तव ज्योती ईष्युर्चयंः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व शर्धो मार्रुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्ग्यः। त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चतुर्थाः पेश्रमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नवमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दशमा एकाद्शेषुं श्रयध्वम्। एकाद्शा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। द्वाद्शास्त्रयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चृतुर्द्शाः पंश्रद्शेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोंडुशेषुं श्रयध्वम्॥ षोडुशाः संप्तदुशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अंष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एंकान्नवि शेषुं श्रयध्वम्। पुकान्नविर्शा विर्शेषु श्रयध्वम्। विरशा एंकवि श्रोषुं श्रयध्वम्। एकवि श्रा द्वांवि श्रोषुं श्रयध्वम्। द्वावि १ शास्त्रं योवि १ शेषु श्रयध्वम्। त्रयोवि १ शाश्चं तुर्वि १ शेषुं श्रयध्वम्। चतुर्वि ५ शाः पंश्रवि ५ शेषुं श्रयध्वम्। पृश्रवि ५ शाः षंड्वि १ शेषुं श्रयध्वम्॥ षड्वि १ शाः संप्तवि १ शेषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्शा अष्टाविश्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाविश्शा

एंकान्निन्ने शेषुं श्रयध्वम्। एकान्निन्ने शास्त्रि शेषुं श्रयध्वम्। त्रि श्रा एंकिन्नि श्रयध्वम्। एकिन्नि श्रयध्वम्। एकिन्नि श्रयध्वम्। द्वानि श्रयध्वम्। द्वानि श्रयध्वम्। द्वानि श्रयध्वम्। द्वानि श्रयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रं यस्त्रि श्राः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्कांम इदं जुहोिमं। तन्मे समृध्यताम्। वय स्यांम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भवः स्वंः स्वाहां॥ अभ्राय फट्॥

॥पश्चाङ्गम्॥

हु सः श्रुंचिषद्वसुंरन्तिरक्ष्यसद्धोतां वेदिषदितिंथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वंरसदंत्सद्धोमसद्जा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

प्रतिद्वर्ष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भवनानि विश्वा॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ तत्संवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठ सर्वधात्तमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणिं पिश्शतु। आसिंश्रतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समेवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवर्षां विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्रांणतो निमिषतो मंहित्वैक इद्राजा जगंतो बुभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुंष्पदः कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची वेन आंवः। सबुधिया उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवेः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं युज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥ उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा तें मनुतां विष्ठितं जगंत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपंसेध् शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वांनि देव वयुनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जंहराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्याँस्ते स्वाहाँ॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥ इमं यमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्नस्ता वहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥

[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥ वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्। अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥ अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्र्यादित्यास्तिष्ठन्तु। महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥] अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्वा) वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका) सूर्यों मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे) चन्द्रमां मे मनंसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मयि। अहममृते। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों मे श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदंये। हदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हदंये। हदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओ्ष्धिवनस्पृतयों में लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदंये। हृदंयं मिये। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बलु हदये। हदयं मिया। अहम्मृतें। अमृतुं ब्रह्मणि। (बाहू)

पूर्जन्यों मे मूर्प्नि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मृन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतैं। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मिनं श्रितः। आत्मा हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुनरायुरागांत्। पुनः प्राणः पुनराकूंतमागांत्। वैश्वानरो रिश्मिभिवविधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

॥कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥ गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥ लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥ अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥ श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥ [वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्।] जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम्। स्वर्णरत्रखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥ ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥ सन्तप्तहेमखचित ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥ पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तेश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥

सुवर्णरत्नखचित-काश्चीदामविराजिताम् । कदलीलिलितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥ श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्धाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥ सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥

॥ षोडशोपचार पूजा॥

॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नमंः। सेनान्ये नमंः। दिशां च पत्ये नमंः। नमो वृक्षेभ्यो नमंः। हिरंकेशेभ्यो नमंः। पृश्नां पत्ये नमंः। नमंः सस्पिञ्जराय नमंः। त्विषीमते नमंः। पृथीनां पत्ये नमंः। पृथीनां पत्ये नमंः। नमो बसुशाय नमंः। विव्याधिने नमंः। अन्नानां पत्ये नमंः। नमो हिरंकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पृष्टानां पत्ये नमंः। नमो भ्वस्य हेत्ये नमंः। पृष्टानां पत्ये नमंः। नमो भ्वस्य हेत्ये नमंः। जगतां पत्ये नमंः। सो भ्वस्य हेत्ये नमंः। आत्ताविने नमंः। क्षेत्राणां पत्ये नमंः। नमेः सूताय नमंः। अहंन्त्याय नमंः। नमेः सूताय नमंः।

वनानां पत्ये नमंः। नमो रोहिताय नमंः। स्थपत्ये नमंः। वृक्षाणां पत्ये नमंः। नमो मुत्रिणे नमंः। वाणिजाय नमंः। कक्षाणां पत्ये नमंः। नमो भुवन्तये नमंः। वारिवस्कृताय नमंः। ओषंधीनां पत्ये नमंः। नमं उचैर्घोषाय नमंः। आक्रन्दयंते नमंः। पत्तीनां पत्ये नमंः। नमंः कृत्स्रवीताय नमंः। धावते नमंः। सत्त्वनां पत्ये नमंः॥

नमः सहंमानाय नमंः। निव्याधिने नमंः।
आव्याधिनीनां पतंये नमंः। नमंः ककुभाय नमंः।
निषक्षिणे नमंः। स्तेनानां पतंये नमंः।
नमो निषक्षिणे नमंः। इषुधिमते नमंः।
तस्कंराणां पतंये नमंः। नमो वश्चते नमंः।
परिवश्चते नमंः। स्तायूनां पतंये नमंः।
नमो निचेरवे नमंः। परिचराय नमंः।
अरंण्यानां पतंये नमंः। मुष्णतां पतंये नमंः।
जिघा स्त्रायो नमंः। मुष्णतां पतंये नमंः।
नमोऽसिमद्र्यो नमंः। नक्तं चरंद्र्यो नमंः।
प्रकृन्तानां पतंये नमंः। नमं उष्णीषिने नमंः।
प्रकृन्तानां पतंये नमंः। कुलुश्चानां पतंये नमंः।
गिरिचराय नमंः। कुलुश्चानां पतंये नमंः।

नम् इषुंमद्र्यो नमः। धुन्वाविभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमं आतन्वानेभ्यो नमः। प्रतिद्धांनेभ्यश्च नमः। वो नमः। नमं आयच्छंद्र्यो नमः। विसृजद्धश्च नमः। वो नमः। नमोऽस्यंद्र्यो नमः। विध्यंद्धश्च नमः। वो नमः। नम् आसीनेभ्यो नमः। शयानेभ्यश्च नमः। वो नमः। नमः स्वपद्धो नमः। जाग्रंद्धश्च नमः। वो नमः। नम्स्तिष्ठंद्र्यो नमः। धावंद्धश्च नमः। वो नमः। नमः सुभाभ्यो नमः। सुभापंतिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमो अश्वभ्यो नमः। अश्वपतिभ्यश्च नमः। वो नमः॥

नमं आव्याधिनींभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नम् उगंणाभ्यो नमंः। तृ रहतीभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो गृत्सेभ्यो नमंः। गृत्सपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो व्रातेंभ्यो नमंः। व्रातंपितभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो गणेभ्यो नमंः। गणपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो विरूपेभ्यो नमंः। विश्वरूपेभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो महन्द्यो नमंः। श्रुष्ठकेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो रथिभ्यो नमंः। अर्थेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो रथैभ्यो नमंः। रथेपितिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमः सेनांभ्यो नमः। स्नानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः सेनांभ्यो नमः। स्नानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः श्रुप्यो नमः। स्नुहित्भ्यंश्च नमः। वो नमः। नम्स्तक्षंभ्यो नमः। रथकारेभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः कुलालेभ्यो नमः। कुमरिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमः पुञ्जिष्टेभ्यो नमः। निषादेभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमं इषुकुद्धो नमः। धुन्वकुद्धश्च नमः। वो नमः। नमो मृग्युभ्यो नमः। श्वनिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः श्वभ्यो नमः। श्वपंतिभ्यश्च नमः। वो नमः॥

नमों भवायं च नमंः। रुद्रायं च नमंः। नमः शर्वायं च नमः। पृशुपतये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नमः। शितिकण्ठांय च नमः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। व्युप्तकेशाय च नर्मः। नर्मः सहस्राक्षायं च नर्मः। शतधंन्वने च नर्मः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मीढुष्टमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमों हस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमों वृद्धार्यं च नमंः। संवृध्वंने च नमंः। नमो अग्नियाय च नमंः। प्रथमायं च नमंः। नमं आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नर्म ऊर्म्याय च नर्मः। अवस्वन्याय च नर्मः।

नमः स्रोतस्याय च नमः। द्वीप्याय च नमः॥

नमों ज्येष्ठायं च नमंः। कनिष्ठायं च नमंः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपरजायं च नमः। नमों मध्यमायं च नमंः। अपगल्भायं च नमंः। नमों जघन्यांय च नमंः। बुधियाय च नमंः। नर्मः सोभ्याय च नर्मः। प्रतिसर्याय च नर्मः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमे उर्वर्याय च नमः। खल्याय च नमः। नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः। नमो वन्यांय च नमंः। कक्ष्यांय च नमंः। नर्मः श्रवायं च नर्मः। प्रतिश्रवायं च नर्मः। नमं आशुषेणाय च नमः। आशुरंथाय च नमः। नमः शूराय च नमेः। अवभिन्दते च नमेः। नमों वर्मिणे च नमः। वरूथिने च नमः। नमों बिल्मिनें च नमंः। कवचिनें च नमंः। नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतसेनायं च नमः॥

नमो दुन्दुभ्याय च नमः। आह्नस्याय च नमः। नमो धृष्णवे च नमः। प्रमुशाय च नमः। नमो दूतायं च नमः। प्रहिताय च नमः।

नमों निष्क्रिणें च नमंः। इषुधिमतें च नमंः। नमंस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनं च नमंः। नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वने च नमः। नमः सुत्याय च नमंः। पथ्याय च नमंः। नमें काट्यांय च नमं। नीप्यांय च नमं। नमः सूद्याय च नमः। सुरस्याय च नमः। नमों नाद्यायं च नमंः। वैशन्तायं च नमंः। नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमंः। अवर्ष्यायं च नमंः। नमों मेघ्यांय च नमंः। विद्युत्यांय च नमंः। नमं ईप्रियाय च नमंः। आतप्याय च नमंः। नमो वात्यांय च नमंः। रेष्मियाय च नमंः। नमों वास्त्व्याय च नमंः। वास्तुपायं च नमंः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नमस्ताम्रायं च नमः। अरुणायं च नमः। नमः शृङ्गायं च नमः। पृशुपतंये च नमः। नमं उग्रायं च नमः। भीमायं च नमः। नमो अग्रेवधायं च नमः। दूरेवधायं च नमः। नमो हुन्ने च नमः। हिनीयसे च नमः। नमो वृक्षेभ्यो नमः। हिरिकेशेभ्यो नमः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शुम्भवे च नर्मः। म्योभवे च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। म्यस्करायं च नर्मः। नर्मः शिवायं च नर्मः। शिवतराय च नर्मः। नर्मस्तीर्थ्याय च नर्मः। कूल्याय च नर्मः। नर्मः पार्याय च नर्मः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्मः आतार्याय च नर्मः। आलाद्याय च नर्मः। नर्मः शष्ट्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिक्त्याय च नर्मः। प्रवाह्याय च नर्मः॥

नमं इरिण्यांय च नमंः। प्रपृथ्यांय च नमंः। नमंः कि॰शिलायं च नमंः। क्षयंणाय च नमंः। नमंः कपिर्दिनं च नमंः। पुल्रस्तयं च नमंः। नमो गोष्ठ्यांय च नमंः। गृह्यांय च नमंः। नम्स्तल्प्यांय च नमंः। गेह्यांय च नमंः। नमः काट्यांय च नमंः। गृह्वरेष्ठायं च नमंः। नमः ष्ठाट्यांय च नमंः। निवेष्प्यांय च नमंः। नमः पा॰स्व्यांय च नमः। रज्ञस्यांय च नमः। नमः शुष्क्यांय च नमः। हिरित्यांय च नमः। नमः लोप्यांय च नमः। उलुप्यांय च नमः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नमंः पृण्याय च नमंः। पृण्शृद्धांय च नमंः। नमों ऽपगुरमांणाय च नमंः। अभिघ्नते च नमंः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नमंः। किरिकेभ्यो नमंः। देवाना हिंदियेभ्यो नमंः। नमों विक्षीणकेभ्यो नमंः। नमों विचिन्वत्केभ्यो नमंः। नमं आनिरहतेभ्यो नमंः। नमं आमीवत्केभ्यो नमंः।

॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तृनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रुद्रायं तृवसें कपूर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो मृहान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उिष्ठितम्। मा नो विधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥

मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नों रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्स्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्मधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हांः॥ स्तुहि श्रुतं गर्त्सद् युवानं मृगं न भीममुपहलुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यम्स्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तर्व हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



॥नमस्काराः॥

सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वें उन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा ५ सहस्रयोज्ने-

नमः॥९॥

ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ५ रुद्रा उपंश्रिताः। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥ ये वृक्षेषुं सुस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥ ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः। तेषा ५ सहस्रयोज्ने-ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणंः। तेषा ५

य एतावंन्तश्च भूया रसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा र

सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो

सहस्रयोज्नेऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येषामन्निमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दर्श दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमों रुद्रेभ्यो येंऽन्तरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥

॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरा-गंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽस्ंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वाक्रं मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्ञ्रा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्षि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्येष्ठमं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भेश्च मे जेमा चं मे महिमा चं मे विरमा चं मे प्रथिमा चं मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिंश्च मे सुत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदंश्व मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपर्थं च म ऋदं चं म ऋदिंश्च मे क्रप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मितश्चं मे सुमितश्चं मे॥२॥ शं च में मयंश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च में कामंश्च मे सौमनसर्श्व मे भद्रं चं मे श्रेयंश्व मे वस्यंश्व मे यशंश्व मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमंश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे संविचं मे जात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूर्ध मे सीरं च मे लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनिम्त्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयंनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिंश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिंश्व मे विभ चं मे प्रभ चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे ब्रीह्यंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

अश्मां च मे मृत्तिंका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकंताश्च मे वनस्पतंयश्च मे हिरंण्यं च मेऽयंश्च मे सीसं च मे त्रपुंश्च में श्यामं चं में लोहं चं में ऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओर्षधयश्च मे कृष्टपच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्याश्चे मे पशर्व आरण्यार्श्व यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वस् च मे वस्तिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥ अग्निर्श्वं म इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म इन्द्रंश्च मे सविता चं म इन्द्रंश्च में सरंस्वती च म इन्द्रंश्च मे पूषा च म इन्द्रंश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रेश्च में मित्रश्चं म इन्द्रेश्च में वर्रुणश्च म इन्द्रेश्च मे त्वष्टां च म इन्द्रेश्च मे धाता च म इन्द्रेश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रेश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रेश्च मे पृथिवी च म इन्द्रेश्च मेऽन्तिरक्षं च म इन्द्रंश्च मे द्यौश्चं म इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म इन्द्रंश्च मे मूर्धा च म इन्द्रंश्च मे प्रजापितिश्च म इन्द्रंश्च मे॥६॥ अर्श्युश्चं मे रिश्मश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽिधंपितिश्च म उपार्श्युश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानंश्च मे शुक्रश्चं मे मन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे धुवश्चं मे वैश्वदेवश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽितग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्रीवृतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे विदेश मे धिष्णियाश्च मे सुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंबश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंण च मे द्रोणकल्शश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म आग्नींप्रं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पच्ताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥ अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्चंरीर्ङ्गलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौवृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥ गर्मांश्च मे वृत्साश्चं मे त्र्यांविश्च मे त्र्यांवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्च मे पश्चांवी चं मे त्रिवत्सश्चं मे

त्रिवत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्ठवाचं मे पष्ठौही चं म उक्षा चं मे वशा चं म ऋषभश्चं मे वेहचं मेऽनड्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेन कल्पता ॥ श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनों यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा युज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्॥१०॥ एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि शतिश्च मे त्रयोवि शतिश्च मे पश्चेवि शतिश्च मे सप्तवि श्रातिश्च मे नवंवि शतिश्च म एकंत्रि शच मे त्रयंस्नि शच मे चतस्त्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्रातिश्चं मे चतुंर्विश्रातिश्च मेऽ हावि ५ शतिश्व में द्वाति ५ शच में पद्गि ५ शच में चत्वारि १ शर्च मे चतुंश्चत्वारि १ शर्च मेऽष्टाचेत्वारि १ शर्च मे वार्जश्च प्रसवश्चापिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्घा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥११॥ महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥ इडां देवृहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृहस्पतिंरुक्थामुदानिं शश्सिषद्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यास १ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवायं धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥
तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवायं धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (दशवारं जपेत्।)
महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

॥ प्रार्थना ॥

॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥ नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥ ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पश्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनामुंप-मश्रवस्तमम्।

ज्येष्ट्रराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥ शं चे मे मयंश्च मे प्रियं चे मेऽनुकामश्चं मे कामंश्च मे सौमन्सर्श्व मे भृद्रं चं मे श्रेयंश्व मे वस्यंश्व मे यशंश्व मे भगंश्व मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धृता चं मे क्षेमंश्व मे धृतिश्व मे विश्वं च मे महंश्व मे संविचं मे ज्ञात्रं च मे सूर्श्व मे प्रसूर्श्व मे सीरं च मे ल्यश्वं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनांमयच मे जीवातुश्व मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे शयंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवतें रुद्राय॥
नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यामृत ते नमंः॥ या त इषुंः शिवतंमा शिवं ब्मूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिमूर्व्यस्तंवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ शिवेन वचंसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म स्मुमना असत्॥ अध्यंवोचदिधवक्ता प्रथमो देव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बुभुः सुंमङ्गरुः। य चेमा रुद्रा अभितों दिक्षु श्विताः संहस्रशोऽवैषा हे हेडं

ईमहे॥ असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोंहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशत्रुदहार्यः॥ उतैनं विश्वां भूतानि स दष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः। प्र मुश्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्हियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेंषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुंः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवा उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षथिः। या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिंब्रुज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें॥ उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतंः॥ अथो य इंषुधिस्तव्ऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥ [नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तुकार्य त्रिका[ला]ग्निकालार्य कालाग्निरुद्रार्य नीलकण्ठायं मृत्युअयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥] नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पत्ये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पत्ये नमो नमः सस्पिअराय त्विषीमते

पथीनां पतंये नमो नमों बसुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पतंये

नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पत्ये नमो नमों भ्वस्यं हेत्ये जगतां पत्ये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पत्ये नमो नमेः सूतायाहंन्त्याय वनांनां पत्ये नमो नमो रोहिताय स्थपत्ये वृक्षाणां पत्ये नमो नमो मित्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषंधीनां पत्ये नमो नमे उच्चेघींषायाक्रन्दयंते पत्तीनां पत्ये नमो नमेः कृत्स्रवीताय धावंते सत्वंनां पत्ये नमोः॥२॥

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगंणाभ्यस्तृ १ हतीभ्यंश्च वो नमो नमों गृत्सेभ्यों गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभयो व्रातंपतिभ्यश्च वो नमो नमों गणेभ्यों गणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमों रथिभ्यों ऽरथेभ्यंश्च वो नमो नमो रथेंभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमंः, क्षत्तृभ्यंः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमा नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृद्धौ धन्वकृद्धंश्च वो नमो नमों मृगयुभ्यः श्वनिभ्यंश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमः॥४॥ नमों भवायं च रुद्रायं च नमः शर्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कपर्दिनं च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हस्वायं च वामनायं च नमों बृहते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नर्मः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥ नमों ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमं पूर्वजायं चापरजायं च

नमों मध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघन्यांय च बुध्नियाय च नर्मः सोभ्यांय च प्रतिसर्याय च नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च नमं उर्वर्याय च खल्यांय च नमः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमों वर्मिणें च वरूथिनें च नमों बिल्मिनें च कवचिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥ नमो दुन्दुभ्यांय चऽऽहनन्यांय च नमो धृष्णवे च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निषङ्गिणें चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चऽऽयुधिनं च नमंः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्यांय च सरस्यांय च नमों नाद्यायं च वैशन्तायं च नमः कृप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमं ईप्रियांय चऽऽतप्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्तव्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चऽऽलाद्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिक्त्याय च प्रवाह्याय च॥८॥

नमं इिष्णांय च प्रपृथ्यांय च नमः कि शिलायं च क्षयंणाय च नमः कपिदिने च पुल्स्तये च नमो गोष्ठांय च गृह्यांय च नम्स्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमो हृद्य्यांय च निवेष्ण्यांय च नमः पाश्स्व्यांय च रज्स्यांय च नमः शुष्क्यांय च हिर्त्यांय च नमो लोप्यांय चोल्प्यांय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमे आख्विदते च प्रिख्वदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाः हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकिभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तुनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रुद्रायं तुवसें कपूर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायजे

पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्ष्यद्वीराय सुम्रम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्त्सदं युवानं मृगं न भीममुपहत्रुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तर्वानो अन्यं तें अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परिं त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नः सुमनां भव। पुरमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र १ हेतयोऽन्यम्स्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥ सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यंर्ण्वै-उन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्५ रुद्रा

उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं स्स्पिञ्जंरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निषक्षिणः॥ य एतावंन्तश्च भूयारं सश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषारं सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि॥११॥

[त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्नियं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओष्धीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वामहे सौमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये तें सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायुस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। चुम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्लुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वार्क्चं मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोतं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूर्षि च मे शरीराणि च मे॥ यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत् जायंमान् स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्मश्च मे जेमा चं मे महिमा चं मे विरुमा चं मे प्रथिमा चं मे वृष्मां चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिश्च मे सत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे क्रीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं म ऋद्धिंश्च मे कुप्तं चं मे कृषिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥ यस्मात्परं नापरमस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौस्ति किश्चित्।

वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>शिवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्च में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्च में प्रसूश्चं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातृश्च में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥

न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांनुशुः। परेण नाकुं निहितुं गुहांयां विभ्राजंदेतद्यतंयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पूष्टं चं मे पृष्टिश्व मे विभ चं मे प्रभ चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽन्नं च मेऽक्षुंच मे ब्रीहयंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुसुरांश्व मे प्रियङ्गं वश्व मेऽणंवश्व मे श्यामकांश्व मे नीवारांश्व मे॥

वेदान्तिविज्ञान्सिनिश्चितार्थाः सन्त्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च में ऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं च में ऽग्निश्चं म आपश्च में वीरुधंश्च म ओर्षध्यश्च में कृष्टपुच्यं च में ऽकृष्टपुच्यं च में ग्राम्याश्चं में प्शवं आर्ण्याश्चं युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में

शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥ दहं विपापं प्रमें ऽश्मभूतं यत्पुंण्डरीकं पुरमध्यस् इस्थम्। तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसितव्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥ अग्निश्चं म इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म इन्द्रंश्च मे सविता चं म इन्द्रंश्च में सरंस्वती च म इन्द्रंश्च मे पूषा च म इन्द्रंश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म इन्द्रेश्च मे त्वष्टां च म इन्द्रेश्च मे धाता च म इन्द्रेश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रंश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी च म इन्द्रंश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च मे दौश्चं म इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म इन्द्रेश्च मे मूर्धा चं मु इन्द्रेश्च मे प्रजापंतिश्च मु इन्द्रेश्च मे॥ यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठिंतः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>ईशानः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥ अ॰शुश्चं मे रिमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपा॰शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्चं मे मुन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वानरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वृतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वृतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्रीवृतश्चं मे हारियोज्नश्चं मे॥ सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्धंवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इध्मश्चं मे बर्हिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वार्श्च मेऽधिषवंण च मे द्रोणकल्शश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयश्च म् आग्नींग्नं च मे हिविधानं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥ वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो मनोन्मंनाय नमोः॥

अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भीमः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्चरीरङ्गलयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमश्च

मे यजुंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥ अघोरैंभ्योऽथं घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥ गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्व मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सर्श्व मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाचं मे तुर्योही च मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वशा चं म ऋषभश्चं मे वेहचं मेऽनड्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेन कल्पता ॥ श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनों यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥ तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भवोद्भवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥ एकां च मे तिस्रश्चं मे पर्श्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च में त्रयोंदश च मे पश्चंदश च में सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि॰शतिश्च मे त्रयोवि॰शतिश्च मे पश्चेवि शातिश्च मे सप्तवि श्रातिश्च मे नवंवि शातिश्च म एकंत्रि शच मे त्रयंस्नि शच मे चतंस्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंर्विश्शतिश्च मेऽष्टावि ५ शतिश्व मे द्वात्रि ५ शच मे पद्गि ५ शच मे चत्वारि शर्च मे चतुंश्चत्वारि शर्च मेऽष्टाचत्वारि शर्च मे वार्जश्च प्रसंवश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्घा च व्यिश्रियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥ [इडां देवहर्मनुंर्यज्ञनीर्बृहस्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिषद्विश्वं-देवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातर्मा मां हिश्सीर्मध् मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तुः शान्तुः शान्तिः॥



॥ रुद्रपद्पाठः॥

ॐ। गुणानांम्। त्वा। गुणपंतिमितिं गुण-पृतिम्। हुवामहे। कविम्। कवीनाम्। उपमश्रंवस्तम्मित्युंपमश्रंवः-तुम्म्॥ ज्येष्ठराजमितिं ज्येष्ठ-राजम्॥ ब्रह्मणाम्। ब्रह्मणः। पृते। एतिं। नः। शृण्वन्। ऊतिभिरित्यूति-भिः। सीद् । सार्वनम्॥ नर्मः। ते। रुद्र। मृन्यवैं। उतो इतिं। ते। इषंवे। नर्मः॥ नर्मः। ते। अस्तु। धन्वेने। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। उता ते। नर्मः॥ या। ते। इषुः। शिवतमितिं शिव-तमा। शिवम्। बुभूवं। ते। धनुः॥ शिवा। शर्य्यां। या। तवं। तयां। नः। रुद्र। मृडय्॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तन्ः। अघोरा। अपापकाशिनीत्यपाप-काशिनी॥ तयां। नः। तनुवां। शन्तंम्यति शम्-तम्या। गिरिश्नतिति गिरि-शन्त। अभीतिं। चाकशीहि॥ याम्। इषुम्ं। गिरिश्नतिति गिरि-शन्त। हस्तैं। (१)

बिर्भर्षि। अस्तंवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र। ताम्। कुरु। मा। हिर्सीः। पुरुषम्। जगंत्॥ शिवेनं। वर्चसा। त्वा। गिरिशा अच्छां। वृदामसि॥ यथां। नः। सर्वम्ं। इत्। जगंत्। अयुक्ष्मम्। सुमना इतिं सु-मनाः । असंत्॥ अधीतिं। अवोचत्। अधिवक्तेत्यंधि-वृक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्॥ अहीन्ं। च। सर्वान्ं। जम्भयन्ं। सर्वाः। च। यातुधान्यं इतिं यातु-धान्यः॥ असौ। यः। ताम्रः। अरुणः। उत। बुभुः। सुमङ्गल् इतिं सु-मङ्गलः॥ ये। च। इमाम्। रुद्राः। अभितः। दिक्षु। (२)

श्रिताः। सहस्रश इति सहस्र-शः। अवेति। एषाम्। हेर्डः। ईमहे॥ असौ। यः। अवसर्पतीत्यंव-सर्पति। नीलंग्रीव इति नीलं-ग्रीवः। विलोहित् इति वि-लोहितः॥ उत। एनुम्। गोपा इति गो-पाः। अदृश्नन्। अदृशन्। उदहार्य इत्युद-हार्यः॥ उत। एनम्। विश्वा। भूतानि। सः। दृष्टः। मृडुयाति। नः॥ नर्मः। अस्तु। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। सहस्राक्षायेतिं सहस्र-अक्षायं। मीदुषें॥ अथो इति। ये। अस्य। सत्वानः। अहम्। तेभ्यः। अकरम्। नर्मः॥ प्रेतिं। मुश्च। धन्वनः। त्वम्। उभयौः। आर्त्नियोः। ज्याम्॥ याः। च्। ते। हस्ते इषंवः। (३) परेतिं। ताः। भगव इतिं भग-वः। वपु॥ अवतत्येत्यंव-तत्यं। धनुंः। त्वम्। सहंस्राक्षेति सहंस्र-अक्षा शतेंषुध इति शतं-इषुधे॥ निशीर्येति नि-शीर्य। शल्यानाम्। मुखाँ। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भव॥ विज्यमिति वि-ज्यम्। धनुः। कपर्दिनंः। विशंल्य इति वि-शल्यः। बाणंवानिति बाणं-वान्। उत्।। अनेशन्। अस्य। इषंवः। आभुः। अस्य। निषङ्गर्थिः॥ या। ते। हेतिः। मीुढुष्टमेतिं मीढुः-तुम्। हस्तैं। बुभूवं। ते। धर्नुः॥ तयौ। अस्मान्। विश्वतंः। त्वम्। अयुक्ष्मयाँ। परीति। भुज्॥ नर्मः। ते। अस्तु। आयुंधाय। अनाततायेत्यनां-तताय। धृष्णवें॥ उभाभ्यांम्। उता ते। नमंः। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। तर्व। धन्वने॥ परीति। ते। धन्वनः। हेतिः। अस्मान्। वृण्क्तुः। विश्वतंः॥ अथो इतिं। यः। इषुधिरितींषु-धिः। तवं। आरे। अस्मत्। नीतिं। धेहि। तम्॥ (४) नमंः। हिरंण्यबाहव इति हिरंण्य-बाहवे। सेनान्यं इति सेना-न्यैं। दिशाम्। च। पत्रये। नर्मः। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। पशूनाम्। पत्रंये। नर्मः। नमंः। सस्पिञ्जराय। त्विषीमत् इति त्विषी-मते। पथीनाम्। पतंथे। नमंः। नमंः। बुभ्रुशायं। विव्याधिन् इति वि-व्याधिने। अन्नानाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। हरिकेशायेति हरि-केशाय। उपवीतिन् इत्युप-वीतिनैं। पुष्टानांम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। भुवस्य। हेत्यै। जगताम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। रुद्रायं। आतताविन इत्याँ-तताविनें। क्षेत्रांणाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। सूतायं। अहंन्त्याय। वनानाम्। पत्तये। नर्मः। नर्मः। (५) रोहिताय। स्थपतंये। वृक्षाणांम्। पतंये। नमंः। नमंः। मुन्त्रिणें। वाणिजायं। कक्षांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवन्तये। वारिवस्कृतायेति वारिवः-कृतायं। ओषंधीनाम्। पत्ये। नमंः। नमंः। उचैर्घोषायेत्युचैः-घोषाय। आऋन्दयंत इत्याँ-ऋन्दयंते। पत्तीनाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। कृत्स्रुवीतायेतिं कृत्स्न-वीतायं। धावंते। सत्वंनाम्। पतंये। नर्मः॥ (६) नमंः। सहंमानाय। निव्याधिन इतिं नि-व्याधिनें। आव्याधिनीनामित्यां-व्याधिनीनाम्। पत्रये। नमः। नमः। कुकुभायं। निष्क्रिण इति नि-स्क्रिने। स्तेनानाम्। पत्रये। नमंः। नमंः। निष्क्षिण इतिं नि-सङ्गिनें। इष्धिमत् इतींष्धि-मतें। तस्कराणाम्। पत्रये। नमंः। नमंः। वश्चते। परिवर्श्चत इति परि-वश्चते। स्तायूनाम्। पत्ये। नर्मः। नमेः। निचेरव इति नि-चेरवें। परिचरायेति परि-चरायं। अरंण्यानाम्। पत्ये। नमः। नमः। सृकाविभ्य इति सृकावि-भ्यः। जिघा सम्द्र्य इति जिघा सत्-भ्यः। मृष्णताम्। पत्ये। नमः। नमः। असिमद्र्य इत्यंसिमत्-भ्यः। नक्तम्। चरंद्र्य इति चरंत्-भ्यः। प्रकुन्तानामिति प्र-कुन्तानाम्। पत्ये। नमः। नमः। उष्णीषिणें। गिरिचरायेति गिरि-चरायं। कुलुश्चानाम्। पत्ये। नमः। पत्ये। नमः। नमः। नमः। नमः। नमः। नमः। नमः। (७)

इषुंमद्र्य इतीषुंमत्-भ्यः। धन्वाविभ्य इति धन्वावि-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। आतुन्वानेभ्य इत्यां-तुन्वानेभ्यः। प्रतिद्धांनेभ्य इति प्रति-दधांनेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। आयच्छंद्र्य इत्यायच्छंत्-भ्यः। विसृजद्र्य इति विसृजत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। अस्यद्र्य इत्यस्यंत्-भ्यः। विध्यंद्र्य इति विध्यंत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। आसीनेभ्यः। श्रायांनेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। आसीनेभ्यः। श्रायांनेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। तष्ठंद्र्य इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नमः। तष्ठंद्र्य इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। स्माभ्यः। स्मापंतिभ्य इति स्मापंति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। नमः। समापंतिभ्य इति स्वापत्-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। अश्वंभ्यः। अश्वंपतिभ्य इत्यश्वंपति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। अश्वंभ्यः। अश्वंपतिभ्य इत्यश्वंपति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। तिष्ठंद्र्यः। नमः। नमः। अश्वंभ्यः। अश्वंपतिभ्य इत्यश्वंपति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। । ।

नमंः। आव्याधिनींभ्य इत्यां-व्याधिनींभ्यः। विविध्यंन्तीभ्य इति वि-विध्यंन्तीभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। उगंणाभ्यः। तुर्ह्तीभ्यंः। च। वः। नमंः। नमंः। गृत्सेभ्यंः। गृत्सपंतिभ्य इति गृत्सपंति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। व्रातेभ्यः। व्रातंपितभ्य इति व्रातंपिति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। गणभ्यः। गणपंतिभ्य इति गणपंति-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। विरूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्यः इति विश्व-रूपेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। नमः। महन्त्र्य इति महत्-भ्यः। क्षुष्ठकेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। गण्येभ्यः इति र्थि-भ्यः। अर्थेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। रथेभ्यः। (९)

नमंः। भ्वायं। च्। रुद्रायं। च। नमंः। श्वायं। च। पृशुपतंय इति पशु-पतंये। च। नमंः। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। च। शितिकण्ठायेति शिति-कण्ठाय। च। नमंः। कुपर्दिनै। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्त-केशाय। च। नमंः। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षायं। च। श्रुत्धंन्वन इति श्रुत-धुन्वने। च। नमंः। गिरिशायं। च। शिपिविष्टायेतिं शिपि-विष्टायं। च। नर्मः।
मीदुर्षमायेतिं मीदुः-तमाय। च। इषुंमत् इतीषुं-मृते। च।
नर्मः। हुस्वायं। च। वामनायं। च। नर्मः। बृह्ते। च। वर्षीयसे।
च। नर्मः। वृद्धायं। च। संवृध्वंन इतिं सम्-वृध्वंने। च। (११)
नर्मः। अग्नियाय। च। प्रथमायं। च। नर्मः। आशवें। च।
अजिरायं। च। नर्मः। शीघ्रियाय। च। शीभ्याय। च।
नर्मः। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्यायेत्यंव-स्वन्याय। च। नर्मः।
स्रोतस्याय। च। द्वीप्याय। च॥ (१२)

नमः। ज्येष्ठायं। च। किन्ष्ठायं। च। नमः। पूर्वजायेतिं पूर्व-जायं। च। अपुर्जायेत्यंपर-जायं। च। नमः। मध्यमायं। च। अपुर्गल्भायेत्यंप-गुल्भायं। च। नमः। जुघन्यांय। च। बुध्रियाय। च। नमः। सोभ्यांय। च। प्रतिसर्यायितिं प्रति-सर्याय। च। नमः। याम्याय। च। क्षेम्याय। च। नमः। उर्व्याय। च। वल्याय। च। नमः। क्षोक्याय। च। अवसान्यायेत्यंव-सान्याय। च। नमः। वन्याय। च। कक्ष्याय। च। नमः। श्रवायं। च। क्ष्याय। च। नमः। श्रवायं। च। प्रतिश्रवायेतिं प्रति-श्रवायं। च। (१३)

नर्मः। आशुषेणायेत्याशु-सेनाय। च। आशुरंथायेत्याशु-रथाय। च। नर्मः। शूराय। च। अवभिन्दत इत्यंव-भिन्दते। च। नर्मः। वर्मिणै। च। वरूथिनै। च। नर्मः। बिल्मिनै। च। क्वचिनै। च। नर्मः। श्रुतायं। च। श्रुतसेनायेति श्रुत-सेनायं। च॥ (१४) नमंः। दुन्दुभ्याय। च। आहुन्न्यायेत्याँ-हुन्न्याय। च। नमंः। धृष्णवँ। च। प्रमृशायेति प्र-मृशायं। च। नमंः। दूतायं। च। प्रहिंतायेति प्र-हिताय। च। नमंः। निषक्षिण इति नि-सङ्गिनै। च। इषुधिमत् इतीषुधि-मतेँ। च। नमंः। तीक्ष्णेषंव इति तीक्ष्ण-इषवे। च। आयुधिनैं। च। नमंः। स्वायुधायेति सु-आयुधायं। च। सुधन्वंन इति सु-धन्वंन। च। नमः। सुत्याय। च। पथ्याय। च। नमंः। काट्याय। च। नीप्याय। च। नमंः। सूद्याय। च। सर्स्याय। च। नमंः। नाद्यायं। च। वैशन्तायं। च। (१५)

नमंः। कूप्याय। च। अवट्याय। च। नमंः। वर्ष्याय। च। अवर्ष्याय। च। विद्युत्यायिति वि-द्युत्याय। च। नमंः। ईप्रियाय। च। आत्प्यायत्यां-त्प्याय। च। नमंः। वात्याय। च। रेष्मियाय। च। नमंः। वास्त्व्याय। च। वास्त्याय। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। च। वास्त्याय। वास्याय। वास्त्याय। वास्त्य

नमंः। सोमाय। च। रुद्रायं। च। नमंः। ताम्रायं। च। अरुणायं। च। नमंः। शङ्गायं। च। पृशुपतंय इतिं पशु-पतंय। च। नमंः। उग्रायं। च। भीमायं। च। नमंः। अग्रेवधायेत्यंग्रे-वधायं। च। दूरेवधायेति दूरे-वधायं। च। नमंः। हुन्ने। च। हनीयसे। च। नमंः। वृक्षेभ्यंः। हरिंकेशेभ्य इति हरिं-केशेभ्यः। नमंः। तारायं। नमंः। शम्भव इतिं शम्-भवें। च। म्योभव इतिं मयः-भवें। च। नमंः। शङ्करायेतिं शम्-करायं। च। म्यस्करायेतिं मयः-करायं। च। नमंः। शिवायं। च। शिवतंरायेतिं शिव-तराय। च। (१७)

नमंः। तीर्थ्याय। च्। कूल्याय। च्। नमंः। पार्याय। च। अवार्याय। च। नमंः। प्रतरंणायिति प्र-तरंणाय। च। उत्तरंणायेत्युंत्-तरंणाय। च। नमंः। आतार्यायेत्याँ-तार्याय। च। आलाद्यायेत्याँ-लाद्याय। च। नमंः। शष्य्याय। च। फेन्याय। च। नमंः। सिक्त्याय। च। प्रवाह्यायेति प्र-वाह्याय। च॥ (१८)

नमंः। इरिण्याय। च। प्रपृथ्यायिति प्र-पृथ्याय। च। नमंः। किर्शिलायं। च। क्षयंणाय। च। नमंः। कपूर्विनैं। च। पुल्रस्तयें। च। नमंः। गोष्ठ्यायिति गो-स्थ्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। तल्प्याय। च। गेह्याय। च। नमंः। काट्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। हृद्य्याय। च। निवेष्प्यायिति नि-वेष्प्याय। च। नमंः। पार्स्य्याय। च। रजस्याय। च। नमंः। शुष्क्याय। च। हिर्त्याय। च। नमंः। लोप्याय। च। उलप्याय। च। (१९)

नमः। ऊर्व्याय। च। सूर्म्याय। च। नमः। पृण्याय। च। पृण्श्वायिति पर्ण-श्वाय। च। नमः। अपगुरमाणायत्यंप-गुरमाणाय। च। अभिघ्नत इत्यंभि-घ्नते। च। नमः। आख्खिदत इत्या-खिदते। च। प्रख्खिदत इति प्र-खिदते। च। नमः। वः। किरिकेभ्यः। देवानाम्। हृदयेभ्यः। नमः। विक्षीणकेभ्य इति

वि-क्षीणकेभ्यः। नमः। विचिन्वत्केभ्यः इति वि-चिन्वत्केभ्यः। नमः। आनिर्हतेभ्यः इत्यानिः-हृतेभ्यः। नमः। आमी्वत्केभ्यः इत्यां-मीवत्केभ्यः॥ (२०)

द्रापें। अन्धंसः। प्रते। दरिंद्रत्। निलंलोहितेति नीलं-लोहित्॥ एषाम्। पुरुषाणाम्। एषाम्। पुशूनाम्। मा। भेः। मा। अरः। मो इतिं। एषाम्। किम्। चन। आममत्॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तृनः। शिवा। विश्वाहंभेषजीति विश्वाहं-भेषजी॥ शिवा। रुद्रस्यं। भेषजी। तयां। नः। मृड्। जीवसें॥ इमाम्। रुद्रायं। त्वसें। कप्दिनें। क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीराय। प्रेति। भरामहे। मृतिम्॥ यथां। नः। शम्। असंत्। द्विपद् इति द्वि-पदें। चतुंष्पद् इति चतुंः-पदे। विश्वम्ं। पुष्टम्। ग्रामें। अस्मिन्। (२१)

अनांतुर्मित्यनां-तुर्म्॥ मृडा। नः। रुद्र। उत। नः। मयंः। कृिधा क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीराया नमंसा। विधेमा ते॥ यत्। शम्। चा योः। चा मनुंः। आयज इत्यां-यजे। पिता। तत्। अश्यामा तवं। रुद्र। प्रणीताविति प्र-नीतौ॥ मा। नः। महान्तम्ं। उत। मा। नः। अर्भकम्। मा। नः। उक्षंन्तम्। उत। मा। नः। उक्षितम्॥ मा। नः। वधीः। पितरम्ं। मा। उत। मातरम्ं। प्रियाः। मा। नः। तनुवंः। (२२)

रुद्र। रीरिषः॥ मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयुंषि। मा। नः। गोषुं। मा। नः। अश्वेषु। रीरिषः॥ वीरान्। मा।

नः। रुद्र। भामितः। वधीः। हविष्मंन्तः। नमंसा। विधेम। ते॥ आरात्। ते। गोघ्न इतिं गो-घ्ने। उत। पूरुषघ्न इतिं पूरुष-घ्ने। क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीराय। सुम्नम्। अस्मे इति। ते। अस्तु॥ रक्षां। च। नः। अधीतिं। च। देव। ब्रूहि। अधां। च। नः। शर्म। युच्छु। द्विबर्हा इति द्वि-बर्हाः॥ स्तुहि। (२३) श्रुतम्। गर्तसदमितिं गर्त-सदम्। युवानम्। मृगम्। न। भीमम्। उपहुबुम्। उग्रम्॥ मृडा। जुरित्रे। रुद्र। स्तवानः। अन्यम्। ते। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। सेनाः॥ परीतिं। नः। रुद्रस्यं। हेतिः। वृण्कु। परीतिं। त्वेषस्यं। दुर्मतिरितिं दुः-मृतिः। अघायोरित्यघा-योः॥ अवेति। स्थिरा। मुघवंद्र्य इति मुघवंत्-भ्यः। तुनुष्व। मीढ्वः। तोकायः। तनयाय। मृडय॥ मीढुंष्टमेति मीढुं-तम। शिवंतमेति शिवं-तम। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भव॥ प्रमे। वृक्षे। आयुंधम्। निधायेतिं नि-धाये। कृत्तिम्। वसानः। एतिं। चर। पिनांकम्। (२४) बिभ्रंत्। एतिं। गृहि॥ विकिंरिदेति वि-किरिद्। विलोंहितेति वि-लोहित्। नर्मः। ते। अस्तु। भुगुव इति भग-वः॥ याः। ते। सहस्रम्। हेतयः। अन्यम्। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। ताः॥ सहस्राणि। सहस्रधेति सहस्र-धा। बाहुवोः। तवं। हेतयः॥ तासाम्। ईशानः। भगव इति भग-वः। प्राचीनां। मुखां। कृधि॥ (२५)

सहस्रांणि। सहस्रश इति सहस्र-शः। ये। रुद्राः। अधीति। भूम्यांम्॥ तेषाम्। सहस्रयोजन इति सहस्र-योजने। अवेति। धन्वांनि। तुन्मसि॥ अस्मिन्। महति। अर्णवे। अन्तरिक्षे। भवाः। अधि॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः॥ नीलग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपंश्रिता इत्युपं-श्रिताः॥ ये। वृक्षेषुं। सस्पिश्चंराः। नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। विलोहिता इति वि-लोहिताः॥ ये। भूतानाम्। अधिपतय इत्यधि-पृतयः। विशिखास इति वि-शिखासंः। कुपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीतिं वि-विध्यंन्ति। पात्रंषु। पिबंतः। जनान्ं॥ ये। पथाम्। पथिरक्षंय इति पथि-रक्षयः। ऐलुबृदाः। यृव्युधः॥ ये। तीर्थानि। (२६) प्रचरन्तीति प्र-चरन्ति। सृकावन्तु इति सृका-वन्तुः। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनंः॥ ये। पृतावन्तः। च। भूया ५ सः। च। दिशः। रुद्राः। वितस्थिर इति वि-तस्थिरे॥ तेषाँम्। सहस्रयोजन इति सहस्र-योजने। अवेति। धन्वानि। तन्मसि॥ नर्मः। रुद्रेभ्यंः। ये। पृथिव्याम्। ये। अन्तरिक्षे। ये। दिवि। येषाँम्। अन्नम्। वार्तः। वुर्षम्। इषंवः। तेभ्यः। दशं। प्राचीः। दशं। दक्षिणा। दर्श। प्रतीचीः। दर्श। उदीचीः। दर्श। ऊर्ध्वाः। तेभ्यः। नर्मः। ते। नुः। मृड्युन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। यः। चृ। नुः। द्वेष्टिं। तम्। वः। जम्भें। दधामि॥ (२७)

त्रयंम्बक्मिति त्रि-अम्बक्म्। यजामहे। सुगन्धिमिति सुगन्धिम्। पुष्टिवर्धनमिति पुष्टि-वर्धनम्॥ उर्वारुकम्। इव।
बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। अमृतात्। यो। रुद्रः। अग्नौ।
यः। अप्स्वत्यंप्-सु। यः। ओषंधीषु। यः। रुद्रः। विश्वाः।
भुवना। आविवेशेत्याः-विवेशः। तस्मैः। रुद्रायं। नमः। अस्तु॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥मन्त्रपुष्पम्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाुक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा र संस्तनूभिः। व्यशंम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यौंऽग्नेरायतंनं वेदं॥ आयर्तनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायर्तनम्। आयर्तनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतेनं वेदं। आयतेनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति॥ आपो वै वायोरायतेनम्। आयतेनवान् भवति। य एवं वेदं। योंऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योंऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनुं वेदे। आयतेनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतेनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥ य पुवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। नक्षंत्राणि वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो नक्षंत्राणामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै नक्षंत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं॥८२॥ योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। पर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पर्जन्यस्यऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पर्जन्यंस्यऽऽयतंनम्। आयर्तनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायर्तनं वेदं॥ आयर्तनवान् भवति। संवत्सरो वा अपामायर्तनम्। आयर्तनवान् भवति। यः संवत्सरस्यऽऽयर्तनं वेदं। आयर्तनवान् भवति। आपो वै संवत्सरस्यऽऽयर्तनम्। आयर्तनवान् भवति। य एवं वेदे। योंऽप्स् नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥

राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमों वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैंश्रवणो दंदातु। कुबेरायं वैश्रवणायं। महाराजाय नमः॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ दशशान्तयः॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैस्तुष्टुवा र संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमंः पृथिवयै नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते कंरोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥२॥ नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमों नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नम ऋषिंभ्यो मन्नकृद्धो मन्नपितभ्यो मा मामृषंयो मञ्जुकृतो मञ्जपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मञ्जकृतो मन्नपतीन्परादां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं

वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों वदिष्ये ब्रह्मं वदिष्ये सत्यं वंदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजायै पश्नां भूयादुप्स्तरणमहं प्रजायै पश्नां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योर्मा पातुं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टुं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विदष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यास र शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥३॥ शं नो वार्तः पवतां मात्रिश्वा शं नंस्तपतु सूर्यः। अहानिशं भंवन्तु नः शर रात्रिः प्रतिधीयताम्। शमुषा नो व्युंच्छतु शर्मादित्य उदेतु नः। शिवा नः शन्तमा भव सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि। इडांयै वास्त्वंसि वास्तुमद्वांस्तुमन्तों भूयासम् मा वास्तोंश्छित्समह्यवास्तुः स भूयाद्यौँ ऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। प्रतिष्ठासिं प्रतिष्ठावंन्तो भूयासम् मा प्रतिष्ठायाँश्छित्समह्यप्रतिष्ठः स भूयाद्यौं ऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आ वांत वाहि भेषजं वि वांत वाहि यद्रपंः। त्वः हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वातु आ सिन्धोरा पंरावतः॥ दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वातु यद्रपंः। यद्दो वातते गृहें ऽमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसे ततों नो धेहि भेषुजम्। ततों नो मह आवंह वात आवांतु भेषुजम्। शुम्भूर्मयोुभूर्नो हृदे प्र णु आयू ५ेषि तारिषत्।

इन्द्रंस्य गृहोंऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्श्वः। सह यन्मे अस्ति तेनं। भूः प्रपंद्ये भूवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये भूर्भृवः सुवः प्रपंद्ये वायं प्रपद्येऽनातां देवतां प्रपद्येऽश्मानमाखणं प्रपंद्ये प्रजापंतेर्ब्रह्मकोशं ब्रह्म प्रपंद्य ओं प्रपंद्ये। अन्तिरक्षं म उर्वन्तरं बृहद्ग्रयः पर्वताश्च यया वातः स्वस्त्या स्वस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वस्तिमानंसानि। प्राणापानौ मृत्योमां पातं प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मियं मेथां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयोन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मियं भाजों दधातु॥

द्युभिर्क्तुभिः परिपातम्स्मानिरिष्टेभिरिश्वना सौभंगेभिः। तन्नों मित्रो वर्रुणो मामहन्तामिदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः। कर्यां निश्चित्र आ भुंवदूती सदावृधः सखाँ। कर्या शिचेष्ठया वृता। कस्त्वां सत्यो मदानां मर्श्हेष्ठो मत्सदन्धंसः। दृढाचिदारुजे वसुं। अभी षु णः सखीनामिवता जरितृणाम्। शृतं भंवास्यूतिभिः। वयः सुपूर्णा उपंसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अपं ध्वान्तमूणुंहि पूर्धि चक्षुंर्मुमुग्ध्यंस्मान्निधयेव बद्धान्॥

शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोर्भिस्नंवन्तु नः। ईशाना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषुजम्। सुमित्रा नु आपु ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मैं

भूयासुर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणाय चक्षंसे। यो वंः शिवर्तमो रसस्तस्यं भाजयतेह नेः। उशतीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ॥ आपों जनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साग्निनां शान्ता सा में शान्ता शुच १ शमयतु। अन्तरिक्ष १ शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्त १ शुच १ शमयतु। द्यौः शान्ता सादित्येनं शान्ता सा में शान्ता शुच र शमयतु। पृथिवी शान्तिं रन्तरिंक्ष र शान्तिद्यौः शान्तिर्देशः शान्तिरवान्तरदिशाः शान्तिरग्निः शान्तिर्वायुः शान्तिरादित्यः शान्तिश्चन्द्रमाः शान्तिर्नक्षेत्राणि शान्तिरापुः शान्तिरोषंधयुः शान्तिर्वनस्पतंयः शान्तिर्गौः शान्तिंरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिर्व्रह्म शान्तिं ब्राह्मणः शान्तिः शान्तिं रेव शान्तिः शान्तिं में अस्तु शान्तिः। तयाह १ शान्त्या संविशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुंष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिंमें अस्तु शान्तिः। एह् श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चैतानि मोत्तिष्ठन्तुमनूत्तिष्ठन्तु मा माु श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपो मेधा प्रंतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मा मा हांसिषुः। उदायुंषा स्वायुषोदोषंधीना रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृता । अनुं। तचक्षुंर्देवहितं पुरस्तौच्छुऋमुचरत्। पश्येम श्ररदः शतं जीवेम शरदेः शतं नन्दाम शरदेः शतं मोदाम शरदंः शतं भवाम शरदंः शत श्रणवाम शरदंः शतं प्रब्रंवाम शरदेः शतमजीताः स्याम शरदेः शतं ज्योक सूर्यं दृशे। य उदंगान्महतोऽर्णवाँद्विभ्राजंमानः सरिरस्य मध्यात्स माँ वृषभो लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आवर्पनमसि धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तरिक्षं दिवं दाधार पृथिवी सदेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधिविस्नंसत्। मेधामनीषे माविंशता समीचीं भूतस्य भव्यस्यावंरुध्यै सर्वमायुंरयाणि सर्वमायुंरयाणि। आभिर्गीर्भिर्यदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो महिं गोत्रा रुजासिं भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। ब्रह्म प्रावादिष्म तन्नो मा हांसीत्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥४॥

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥५॥

शं नो मित्रः शं वर्रणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृह्स्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं विद्यामि। ऋतं विद्यामि। सत्यं विद्यामि। तन्मामंवतु। तह्कतारमवतु। अवंतु माम्। अवंतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥६॥ ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥८॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥९॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः॥१०॥